नगमा मिर्ज़ा, पांचवीं, जबलपुर

अलका भारद्वाज, पांचवीं, कवर्धा

स्वाति स्याग, सात वर्ष, देवास

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 5 अंक 4 अक्टूबर, 89
संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही
कला
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा
एक प्रति : चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कालोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.).

कागज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से
सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद् (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)

इस अंक में...

पाठक लिखते हैं	2
बात, आपस की	3
मेरा पन्ना	4
सृजन	8
दुनिया पक्षियों की	10
तुम भी बनाओ : मछली	15
अपनी प्रयोग शाला	16
कविता : वृक्ष	18
नन्हे सवाल	20
धारावाहिक : भूगर्भ की यात्रा	22
कविताएं	26
कहानी : मधुमक्खी और केंचुआ	27
माथापच्ची	32
काग़ज़ की बर्फ़ी	34
धारावाहिक : गुदड़ीलाल	35

आवरण पर बस्तर के आदिवासी कलाकार मंदर की कलाकृतियां।
छायाकार : विवेक

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

जुलाई अंक में पतंग से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। इतनी छोटी-छोटी चीज़ों का इतिहास भी इतना पुराना हो सकता है? साथ ही छोटी चीज़ें छोटे-छोटे आविष्कार बड़े आविष्कारों की नींव होते हैं। इसलिए छोटे-छोटे प्रयोगों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

— राजेंद्र मालवीय, हरसूद

चकमक के अगस्त, 89 अंक का अवलोकन किया। पत्रिका बालोपयोगी एवं उद्देश्यपूर्ण है। रचनाओं की प्रस्तुति में भाषा व शैली पर्याप्त बोधगम्य व रोचक है, यही गुण पत्रिका की लोकप्रियता का आधार है।

'मेरा पन्ना' में बालकों को अभिव्यक्ति के अवसर देना अनूठा प्रयोग है। कविताएं व कहानी पठनीय हैं। माथा पच्ची की सामग्री बच्चों व बड़ों को भी दिमाग़ी कसरत कराती है। यह स्तंभ ज्ञानवर्धक है। 'मान लो तुम बहरे हो' चित्रकथा के माध्यम से कल्पनाशक्ति जगाने की कोशिश अच्छी लगी। कांच पर विशिष्ट आलेख पसंद आया।

— प्रकाश तातेड़, कांकरोली, उदयपुर (राजस्थान)

आप अपने पत्र को अमूल्य रचनाओं से सुशोभित कर रहे हैं। आपके पत्र 'चकमक' से कई कहानियों का तेलुगू अनुवाद मैंने किया है। ये कहानियां हैदराबाद बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'नलुपु' पत्र में प्रकाशित हो रही हैं। वे कहानियां उक्त संस्था के जरिए कहानी संग्रह के रूप में भी प्रकाशित की जाएंगी।

नन्हा राजकुमार, मानव की कहानी, मारी क्यूरी का भी मैंने अनुवाद किया है। ये रचनाएं भी उक्त संस्था से प्रकाशित की जाने वाली हैं। प्रकाशित कहानी के नीचे 'चकमक के सौजन्य से' और चकमक अंक का महीना और साल भी प्रकाशित कर रहे हैं।

— पोलु शेषगिरि राव, गुंटूर,आंध्रप्रदेश

अगस्त अंक देखकर प्रसन्नता हुई। आकर्षक आवरण के साथ अंदर भी अच्छी सामग्री है। 'गिरगिट का सपना', 'कांच की कहानी' तथा 'वे विकलांग नहीं हैं' काफी अच्छे हैं। सवालीराम जी का स्तंभ देखकर भी प्रसन्नता हुई।

— गिरिजा कुलश्रेष्ठ, सहायक शिक्षिका, तिलौंजरी, मुरैना

पाठक लिखते हैं

मैं बिलासपुर ज़िले की शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, सिलतरा में सहायक शिक्षक के पद पर कार्यरत हूं। इस शाला में आने से पहले मैं जिस शाला में था वहां आपकी पत्रिका चकमक नियमित रूप से पढ़ने को मिलती थी। परंतु इस शाला में यह पत्रिका नहीं आती है क्योंकि यह एक नवीन शाला है तथा एक शिक्षकीय है। छात्र-छात्राओं की संख्या पर्याप्त है। मैं इनको इस उपयोगी पत्रिका का लाभ देना चाहता हूं। परंतु इसे मंगाने की प्रक्रिया से अनभिज्ञ हूं। क्या शिक्षण संस्थाओं हेतु इसके चंदे में कोई छूट दी जाती है? अथवा पूरा चंदा पहले भेजना होगा? कृपया सूचित करें।

☐ अब्दुल अलीम ख़ान, स.शि.शा.पू.मा. शाला, सिलतरा, बिलासपुर

आदिम जाति कल्याण विभाग, जबलपुर द्वारा संचालित माध्यमिक शाला, खमतरा (पहरूआ), तहसील - सिहोरा, ज़िला जबलपुर के ग़रीब आदिवासी हरिजन छात्रों के मानसिक विकास एवं प्रगति हेतु चकमक पत्रिका मंगाना चाहते हैं। किंतु इस विभाग के निर्देश पर संस्था छात्रों से किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लेती है, अतः संस्था के पास कोई फंड नहीं है। पत्रिका निःशुल्क उपलब्ध हो सकेगी अथवा नहीं। कृपा कर सूचित करें।

☐ बसंत शर्मा, शिक्षक, शा.मा. शाला, खमतरा, सिहोरा, जबलपुर

शासकीय प्राथमिक पचपेड़िया नवीन खुला है 1986 में। अतः यहां पर कोई भी शासकीय या अर्धशासकीय पत्रिका नहीं भेजी जा रही है। अतः श्रीमान जी से निवेदन है कि चकमक पत्रिका भेजने की कृपा करें।

☐ गोपालसिंह, प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय, पचपेड़िया, ग्यारसपुर, विदिशा

चांदपुर (सागर) में गत वर्ष चकमक पढ़ने का अवसर मिला था। कुछ अंक यहां भी देखने को मिले हैं, अगस्त अंक सामने है। और जितने भी अंक अब तक देख सका हूं सब एक से बढ़कर एक लगे। उन सब पर कुछ कहना चाहूं तो एक आलेख ही बन जाएगा।

आपसे अनुरोध है कि चकमक नियमित रूप से भेजें। पिछले पांच-छह माह से कोई अंक नहीं आया। दो अंक वर्षारंभ में आए थे फिर अगस्त अंक आया है। मैं छात्रों के उपयोग हेतु अंकों की फाइल बनाना चाहता हूं अतः पत्रिका नियमित ही भेजें।

☐ वीरेंद्र शर्मा, प्राचार्य, शासकीय हाईस्कूल, अनगौर, छतरपुर

ये चार पत्र चार अलग-अलग तरह की शालाओं से आए हैं। ऐसे पत्र हमें अक्सर प्राप्त होते हैं। इनके जवाब व्यक्तिगत रूप से देते भी रहते हैं। यहां इन पत्रों के उत्तर के बहाने हम कुछ जानकारी दे रहे हैं।

चकमक जुलाई, 85 से निरंतर प्रकाशित हो रही है। पहले ही अंक से चकमक **मध्यप्रदेश की सभी माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं में (चाहे वे शिक्षा विभाग द्वारा संचालित हों या आदिम जाति व हरिजन कल्याण विभाग द्वारा)** जा रही है। स्कूलों में जाने वाली प्रतियों का भुगतान प्रतिमाह हमें शासन से प्राप्त होता है। **इसके लिए शाला को कोई चंदा या राशि भेजने की आवश्यकता नहीं है।**

हमारे पास जुलाई, 85 के पहले प्रारंभ हुई शालाओं की सूची है। इसके बाद जो शालाएं प्रारंभ हुई हैं संभव है उनमें चकमक नहीं जा रही हो। **अगर आपकी शाला माध्यमिक या उच्चतर माध्यमिक है और उसमें चकमक नहीं आ रही है तो तुरंत हमें एक पोस्टकार्ड लिखें। पत्र में शाला प्रारंभ होने की तारीख, शाला की सील/मोहर तथा डाक का पूरा पता—मुकाम, पोस्ट, विकासखंड, तहसील, ज़िला तथा पिनकोड—अवश्य लिखें।** पत्र प्राप्त होने पर हम आपकी

बात, आपस की

चकमक पांचवें साल में प्रवेश कर गई है। पांचवें साल की शुरूआत से ही उसने नई मंज़िलें तय करना आरंभ कर दिया है। 'पतंगों की दुनिया' वाला जुलाई का अंक सामग्री के प्रस्तुतिकरण और साज सज्जा के लिहाज़ से एक नया अंक था। इसी अंक से चकमक में विज्ञापन छपना भी शुरू हो गए।

अगस्त अंक से चकमक देश के हिंदीभाषी क्षेत्रों के कुछ चुने हुए रेल्वे स्टेशनों पर मिलने लगी है।

*सितंबर अंक से एक और पायदान पर चकमक ने क़दम रखा है। चकमक अब **'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड'** योजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश की **प्राथमिक शालाओं में भी जाने लगी है** (देखो... 'पाठक लिखते हैं'...)।*

*सितंबर अंक में ही **'नन्हे सवाल'** शीर्षक से एक नया कालम तुमने देखा ही होगा। जल्दी ही जीव-जंतुओं के 'चलने' के तरीकों पर आधारित एक मज़ेदार कालम **'चलते-फिरते तथ्य'** भी शुरू किया जाएगा! इंतज़ार करो!*

*इस अंक से दो नए धारावाहिक तथा एक नया स्तंभ शुरू कर रहे हैं। जूलेवर्न के अंग्रेज़ी उपन्यास 'ए जर्नी इन टू दी सेंटर ऑफ अर्थ' का हिंदी अनुवाद **'भूगर्भ की यात्रा'** की पहली क़िस्त इसी अंक में पढ़ो। इसे हम इंडियन प्रेस, इलाहाबाद के सौजन्य से छाप रहे हैं।*

*दूसरा धारावाहिक है **'नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे'**। एक छोटी-सी लड़की के पास कपड़े का एक नन्हा गुड्डा था—गुदड़ीलाल। गुदड़ीलाल एक बार नाराज़ होकर घर से चला गया और फिर उसके साथ क्या गुजरी यह पढ़ोगे तुम इस धारावाहिक में। इसे हम विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, पेइचिङ, चीन के सौजन्य से तुम तक पहुंचा रहे हैं।*

नया स्तंभ है चित्रकला में रुचि रखने वालों के लिए। एक और ख़बर है तुम्हारे लिए इस अंक में! पर इसके बारे में हम कुछ नहीं बताएंगे। पन्ने पलटो... और खुद देख लो!

शाला का नाम अपनी सूची में जोड़ लेंगे और चकमक भेजना शुरू कर देंगे।

जिन स्कूलों में चकमक नहीं पहुंच रही है या अनियमित रूप से पहुंच रही है वे पहले अपने पोस्ट ऑफिस में पता करें। अगर फिर भी न मिले तो हमें पत्र लिखें।

अब प्राथमिक शालाओं में भी

अभी तक प्राथमिक विद्यालयों में चकमक भेजने के लिए शासन द्वारा किसी तरह का आग्रह या प्रावधान नहीं किया गया था। इसलिए चकमक प्राथमिक शालाओं को नहीं भेजी जाती थी। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत देशभर की प्राथमिक शालाओं में 'ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड' योजना शुरू की गई है। इस योजना के अंतर्गत चकमक पत्रिका का चयन प्राथमिक शालाओं हेतु किया गया है। **सत्र 87-88 में म.प्र. की जिन प्राथमिक शालाओं को इस योजना हेतु चुना गया है उनमें चकमक सितंबर, 89 से जाना शुरू हो गई है।**

माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं की प्रति, प्रतिमाह डाक से भेजी जाती है। हम चाहते हैं कि प्राथमिक शालाओं में भी चकमक सीधे डाक से ही जाए। इसके लिए हमें प्राथमिक शालाओं के पते चाहिए, जो शासन के पास उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए फिलहाल प्राथमिक शालाओं की प्रतियां प्रत्येक ज़िले के ज़िला शिक्षा अधिकारी या उप संचालक शिक्षा के कार्यालय में भेजी जा रही हैं। भविष्य में हमें जब भी प्राथमिक शालाओं के पते प्राप्त होंगे, हम प्रत्येक शाला को उसकी प्रति डाक से भेजना आरंभ कर देंगे।

अगर आपकी शाला में ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना सत्र 87-88 में लागू की गई है तो अपने **विकास खंड शिक्षा अधिकारी या ज़िला शिक्षा अधिकारी/उप संचालक शिक्षा से अपने स्कूल हेतु चकमक की प्रति अवश्य लें।** हमें उम्मीद है चकमक आप तो पढ़ेंगे ही, साथ ही शाला के बच्चों को भी पढ़ने के लिए देंगे।

संपादक

मैं आपकी चकमक पत्रिका की नित्य पाठिका हूं तथा मुझे इसका सदैव इंतज़ार रहता है। मुझे यह पत्रिका बहुत पसंद है। ख़ासतौर से इसलिए कि इसमें हर उम्र-वर्ग के लिए तथा हर विषय वर्ग का पूर्ण समावेश रहता है।

— कु. श्रेष्ठा जैन, झाबुआ

चकमक पत्रिका ने बच्चों एवं हम किशोरों के दिल में जो सम्मान एवं शोहरत पाई है उसके लिए आपको बधाई।

बच्चों की मनःस्थिति एवं विकास योग्य सामग्री जुटाकर उन तक पहुंचाने का क़दम जो चकमक ने उठाया है, सचमुच दूसरी पत्रिकाओं के लिए प्रेरणादायी सिद्ध हो चुका है।

प्रत्येक बालक के अंदर जन्म से ही प्रतिभाएं छिपी होती हैं किंतु उसे विकसित होने के लिए मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं साथ-साथ उसकी स्वयं की लगन की आवश्यकता होती है। चाहे वह क्षेत्र कला का हो, साहित्य का या और कोई क्षेत्र।

चकमक ने यह उपरोक्त दायित्त्व अपने ऊपर लेकर एक महत्त्वपूर्ण क़दम उठाया है।

— सुमन पुरोहित, चंदिया, शहडोल

ऋचा उपलवार, सात वर्ष, बालाघाट

छम छम छम छम

छम छम छम छम
पानी बरसा
छाता लेकर निकले हम
पिछला पैर खिसक पड़ा
गिर पड़े हम!

☐ प्रकाशचंद्र टेलर, आठवीं, बोरखेड़ी, मंदसौर

मोहनलाल शर्मा, सातवीं, अरलावदा, देवास

अटई, बटई और चटई

एक बहुत पुरानी बात है। एक गांव में अटई, बटई और चटई रहते थे। वे तीनों ही जंगल में जाया करते थे और चिड़िया मारकर लाया करते थे। इन चिड़ियों को भूनकर वे खा जाते। इसी से उनका दिन चलता था।

एक दिन वे तीनों जंगल की ओर निकल पड़े। वे हाथ में धनुष पकड़े हुए थे। वे चलते-चलते थक गए। उसी समय अटई ने कहा कि हम तो थक गए हैं हम रुकेंगे। और वे तीनों रुक गए। फिर वे उसी पेड़ के नीचे सो गए। उसके ऊपर अनेक चिड़िया बैठी हुई थीं।

चिड़िया की आवाज़ सुनकर वे जाग गए और चिड़िया की ओर निशाना जमाया क्योंकि उन्हें भूख लगी थी। उन्होंने एक-एक चिड़िया मार गिराई। चिड़ियों को लेकर वे आगे चले।

चटई ने देखा कि जंगल में आग लगी हुई है। उन्होंने अपनी चिड़िया आग में भूंजी। पर चटई की चिड़िया पूरी जल गई। अटई और बटई ने उसे थोड़ा-थोड़ा हिस्सा दिया। चटई का पेट भर गया।

वे आगे बढ़े उन्हें जाते-जाते एक कुंआ दिखाई दिया। उन लोगों को प्यास बहुत ज़ोर से लग रही थी। उसमें अटई उतरा, बटई उतरा, चटई भी उतरा। उन तीनों ने खूब पानी पिया। अटई, बटई चढ़ गए। पर चटई अटक गया। अटई, बटई ने मिलकर खींचा। चटई निकल गया।

☐ कुंज बिहारी पटेल, नवमीं, ढोलर, रायपुर

कमलेश खैरिया, भोपाल

स्वास्थ्य मंत्री का दौरा

चित्र : संतोष

सरकारी अस्पताल
वालों ने सुना
जैसे ही कि स्वास्थ्य मंत्री का
दौरा है
डॉक्टर दौड़े
नर्सें दौड़ीं, कंपाउंडर दौड़े
वार्ड बॉय दौड़े
दौड़े स्वीपर लेकर झाड़ू
घर की (मरीजों की) सभी चद्दरें उठवाईं
चिकित्सालय की नई
चद्दरें बिछवाईं

गंदगी दूर करवाई
सफाई चारों ओर
पर जब सुना कि मंत्री
नहीं आएंगे
आनन-फानन झटपट
वार्ड बॉय आए
घरों की चद्दरें बिछवाईं
वाह रे वाह!
स्वास्थ्य मंत्री का दौरा!

□ अभिलाषा सिंगोरिया, नवमीं, कुक्षी, धार

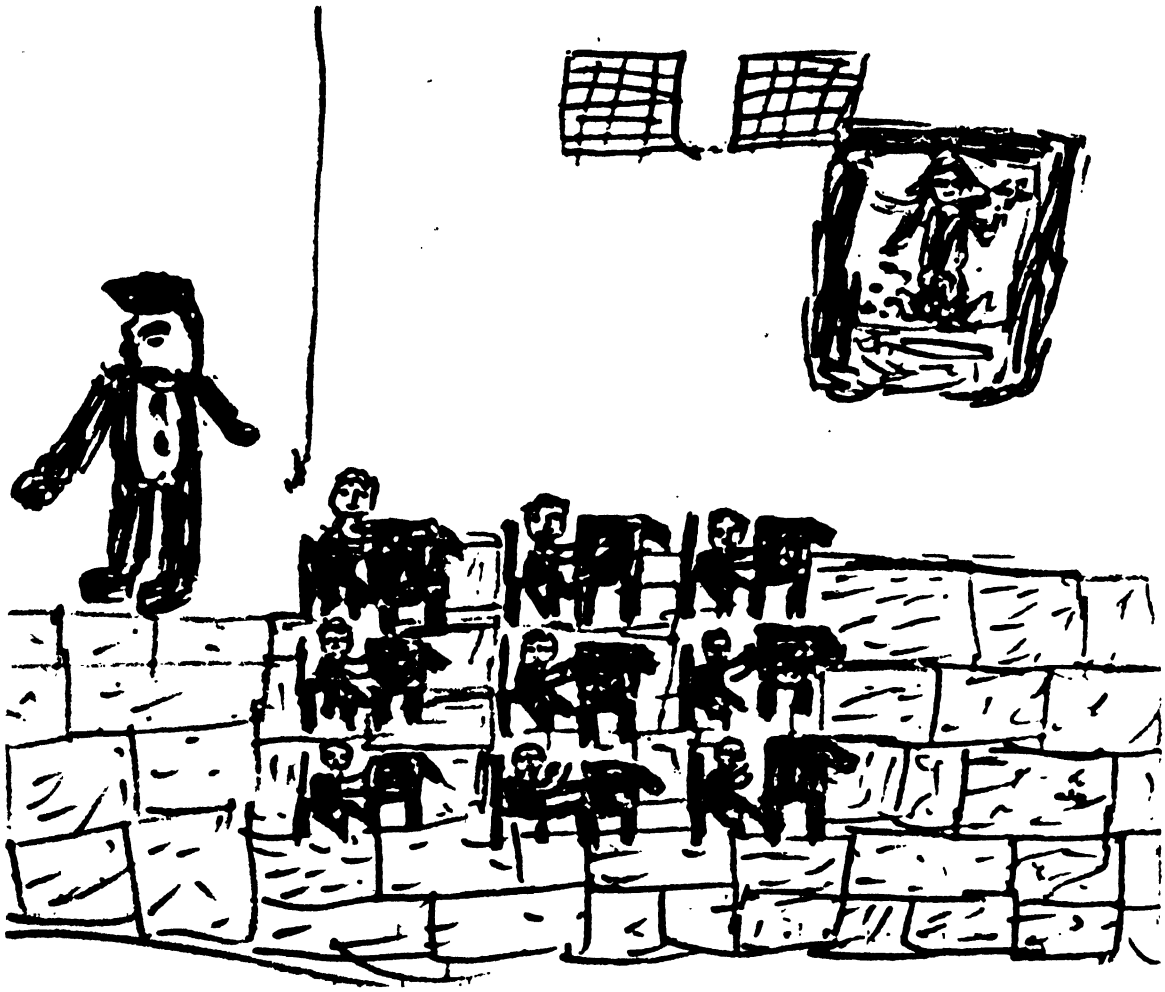

परीक्षा

परीक्षा का दिन पास आया। हम लोगों ने खूब पढ़ाई की। हमने पूरी किताब के प्रश्न और कापियां रट डालीं। परीक्षा देने हम ग्यारह बजे गए। मेरा दिल धड़क रहा था, कि मैंने जो याद किया था वह आएगा या नहीं! और कितने ही लड़के बड़े खुश दिखाई दे रहे थे।

मैंने उन लोगों से पूछा कि आपका अभी पेपर होने वाला है और आप इतने खुश दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि जबतक हमारे पास प्रश्न बैंक है तब तक हमें क्या डर।

मैंने कहा कि आप परीक्षा पहली बार दे रहे हैं शायद! आपको यह पता नहीं है कि परीक्षा में कापी नहीं ले जाते हैं। उन्होंने ज़ोर से कहा, हमने प्रधान अध्यापक को पूरे पांच सौ रुपए दिए हैं टीपने के।

इतने में घंटी लग गई। सभी लड़के क्लास में बैठे थे। टूटे-फूटे पत्तरों में से धूप अंदर आ रही थी। मैं धूप के कारण पसीने से तर हो गया। पेपर बंट गए।

सभी प्रश्न बैंक में से आए थे। पैसे न होने के कारण प्रश्न बैंक नहीं खरीद सका था। वैसे मैंने पूरी पुस्तक पढ़ी थी। इसलिए थोड़ा-थोड़ा लिख दिया। मेरे दोस्त प्रश्न बैंक खुले आम ले गए थे और पूरे प्रश्न करके आए।

□ हेमंत शर्मा, आठवीं, कन्नौद, देवास

सृजन

कहानियां कविताएं निबंध चित्र

तुम्हें याद होगी चकमक की **पहली प्रतियोगिता** और उससे बना **'तुम्हारा अपना अंक'**। हम तुम्हें वैसी ही एक और प्रतियोगिता में भाग लेने का न्यौता दे रहे हैं। यह तो तुम जानते ही हो कि अपनी यानी चकमक की प्रतियोगिता में न तो हार-जीत का कोई चक्कर होता है और न फर्स्ट-सेकंड का! इसमें तो सब जीतते हैं। एक बात हमारे मन में आई हैं कि हम इसे प्रतियोगिता कहें ही क्यों? कुछ और कहें! क्या कहें?... चलो **सृजन** कहते हैं! सृजन तो तुम समझते हो न! सृजन यानी कुछ बनाना, गढ़ना या फिर रचना।

तो आओ सृजन में भाग लो, हिस्सा लो, शामिल हो जाओ!

अगर तुम्हारे पास 'तुम्हारा अपना अंक' (जनवरी, 87) हो तो उसे एक बार ध्यान से अवश्य देख लेना। उसमें कुछ ऐसी बातों पर चर्चा की गई है जिनसे तुम्हें मदद मिलेगी सृजन में।

सृजन में भाग लेने के लिए **कोई नियम-क़ानून या शर्तें नहीं है।** हां कुछ छोटी-मोटी बातों का ध्यान अवश्य रखना होगा।

सृजन में भाग लेने के हक़दार वे पाठक ही हैं जिनकी **आयु 31 दिसंबर, 89 को 17 वर्ष** से अधिक नहीं है।

वैसे सृजन के लिए पूरी स्वतंत्रता है। पर आसानी के लिए रचनाओं के चार वर्ग बनाएं हैं—

कहानी कविता निबंध और चित्र!

रचनाओं का **विषय कोई भी** हो सकता है। पर हमारी अपेक्षा है कि रचनाएं **पर्यावरण, विज्ञान तथा रोज़गार की घटनाओं, समस्याओं, अनुभवों** और तुम्हारी **कल्पनाओं** पर आधारित हों। रचनाएं छोटी या बड़ी—कैसी भी हो सकती हैं।

हमारे पास आमतौर पर जो रचनाएं आती हैं उनमें कुछ किसी दूसरी **पत्रिका या किताब से नक़ल की** गई होती हैं। हमें यक़ीन है कि सृजन में तुम जो रचनाएं भेजोगे वह **मौलिक** होगी। साथ ही एक बात और रचना **अपनी लिखावट** में ही भेजना।

रचना भेजने के लिए कोई भी काग़ज़ या डाक सामग्री (पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय आदि) का उपयोग कर सकते हो!

सृजन

चित्र भी स्याही या रंग जिससे तुम बनाना चाहो—बना सकते हो। काग़ज़ जो तुम्हारे पास हो चलेगा।

रचनाओं की संख्या पर कोई रोक नहीं है। एक व्यक्ति सभी विधाओं की रचनाएं या एक ही विधा की कई रचनाएं भेज सकता है।

चुनी हुई रचनाएं चकमक में प्रकाशित होंगी। **और इनाम? इनाम-विनाम कुछ नहीं! हां, उसकी जगह कुछ सुंदर पुस्तकें उपहार में** भेजी जाएंगी। एक काम तो हम करेंगे ही, सृजन में भाग लेने वाले प्रत्येक भागीदार को चकमक का वह अंक जो सृजन की सामग्री से बनेगा, भेजा जाएगा। अब तो खुश! तो फिर लग जाओ सृजन में।

सृजन में भाग लेने के लिए कोई फ़ीस या प्रवेश शुल्क नहीं है। बस सृजन करो और 31 दिसंबर, 1989 तक हमें भेज दो।

प्रत्येक रचना के साथ अपना **नाम, जन्मतिथि, पूरा पता (डाक घर सहित)** ज़रूर लिखना!

पता तो तुम्हें मालूम ही है—

एकलव्य
ई-1/208
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)
पिनकोड-462 016.

अपने लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड या अंतर्देशीय पर **सृजन** लिख दोगे तो हमें आसानी होगी।

बड़ों से, चाहे वे शिक्षक हों, माता-पिता हों या फिर अभिभावक—एक बात कहना चाहते हैं कि वे अपने नन्हे-मुन्नों को प्रोत्साहित ज़रूर करें पर उनकी सृजनात्मकता के आड़े न आएं। उनके प्रयास में दख़लंदाजी न करें। वे जो, जैसा लिख रहे हैं/बना रहे हैं—उन्हें लिखने दें/बनाने दें। चाहे उनकी लिखावट टेड़ी-मेढ़ी अस्पष्ट ही क्यों न हो, वैसी ही रहने दें। ऐसा नहीं है हम साफ़-सुथरी लिखावट नहीं चाहते, पर हम यह भी जानते हैं कि हर बच्चे के लिए वे सारे साधन, सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं जिनकी मदद से वह अपनी अभिव्यक्ति को सुंदर ढंग से सामने रख सके। कुछ ऐसे ही कारणों से हमने ऐसे आयोजनों में बनाए जाने वाले बंधनों, नियमों से सृजन को मुक्त रखा है। आप भी उन्हें अपने निर्देशों से मुक्त रखें। उसने खुद से कुछ रचा है, बनाया है सृजन किया है यह अहसास बनाए रखें। मत भूलें कि बच्चे के इस सृजन में भी आपकी एक अप्रत्यक्ष भूमिका है।

बाल : अंजना अग्रवाल, भो

प्रवासी पक्षी

चकमक के अगस्त अंक में तुमने एक प्रवासी पक्षी थिरथिरा के बारे में पढ़ा। ऐसे कई अन्य और भी पक्षी हैं जो हमारे आसपास, ठंड के मौसम में दिखाई पड़ते हैं और गर्मी का मौसम शुरू होते ही कहीं और चले जाते हैं। इन पक्षियों का इस प्रकार हर वर्ष आना-जाना जंतु- जगत की सबसे अधिक रोचक और रहस्यमय घटनाओं में से एक है।

'दुनिया पक्षियों की' श्रृंखला में अब तक तुमने जिन पक्षियों के बारे में पढ़ा, उनमें थिरथिरा को छोड़कर बाकी सभी जैसे कौआ, दहियल, मोर, मैना आदि पूरे वर्ष एक ही स्थान पर पाए जाते हैं। इन्हें अप्रवासी पक्षी कहा जाता है।

उत्तरी ध्रुव

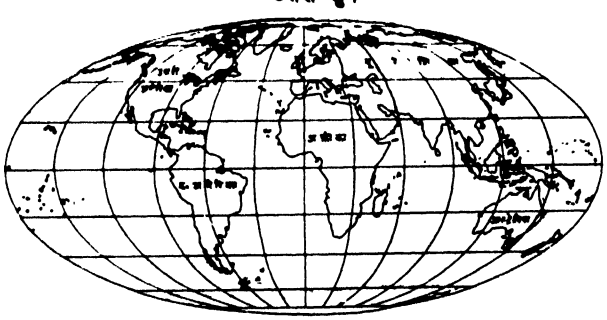

दक्षिणी ध्रुव

वैज्ञानिकों के द्वारा किए गए अध्ययनों से पता चला है कि गर्मी का मौसम शुरू होते ही प्रवासी पक्षी उत्तर की ओर उड़कर ठंडे स्थानों पर पहुंच जाते हैं। वे इन स्थानों पर तीन-चार महीने बिताकर, कड़ाके की सर्दी पड़ने से पहले, दक्षिण की ओर उड़कर गर्म प्रदेशों में वापस आ जाते हैं।

इस प्रकार आने-जाने में ये प्रवासी पक्षी प्रतिवर्ष हज़ारों किलोमीटर की यात्रा करते हैं। गर्मी में गर्म प्रदेशों में तापमान बहुत बढ़ जाता है। पानी के स्रोत सूख जाते हैं और भोजन की भी कमी हो जाती है। इसके विपरीत ठंडे प्रदेशों में इन दिनों मौसम सुहावना रहता है। भोजन भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। प्रवासी पक्षियों को यही चीज़ें ठंडे प्रदेशों की ओर आकर्षित करती हैं। प्रजनन भी ये ठंडे प्रदेशों में ही करते हैं। अक्टूबर से मार्च के बीच इन प्रदेशों में कड़ाके की ठंड पड़ने लगती है और अधिकांश स्थानों पर बर्फ भी पड़ने लगती है। ऐसे में यहां भोजन की भी कमी हो जाती है। जबकि इन दिनों में गर्म प्रदेशों में न केवल मौसम अच्छा होता है वरन् भोजन भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। इसलिए ठंड का मौसम शुरू होते ही प्रवासी पक्षी दक्षिण की ओर उड़ पड़ते हैं। है न मज़ेदार बात? यदि हमें भी हर साल गर्मी का मौसम ठंडे प्रदेशों में और ठंड का मौसम गर्म प्रदेशों में बिताने का मौक़ा मिले तो कितना अच्छा हो!

लेकिन यह प्रवास इतना आसान नहीं है, इससे कई प्रश्न जुड़े हैं। और शायद तुम्हारे दिमाग़ में भी हों!

जैसे प्रवासी पक्षी कितनी लंबी दूरी तय करते हैं? क्या ये अपनी यात्रा बिना रुके पूरी करते हैं या बीच में रुक-रुक कर विश्राम भी करते हैं? इनके उड़ने की गति क्या होती है? प्रवास के दौरान ये कितनी ऊंचाई पर उड़ते हैं! इन्हें कैसे पता चलता है कि कब प्रवास के लिए रवाना हो जाना है? ये अपने सही स्थान पर कैसे पहुंच जाते हैं?

वैज्ञानिकों ने इनमें से कुछ प्रश्नों के उत्तर तो खोज लिए हैं और शेष के उत्तर खोजने के प्रयास चल रहे हैं।

आओ सबसे पहले तो हम यह पता करें कि पक्षियों की उड़ान और उनके प्रवास के बारे में वैज्ञानिक अध्ययन किस प्रकार करते हैं। चित्र देखो। पक्षी के पैर में एक छल्ला पड़ा दिखाई दे रहा है। यह छल्ला

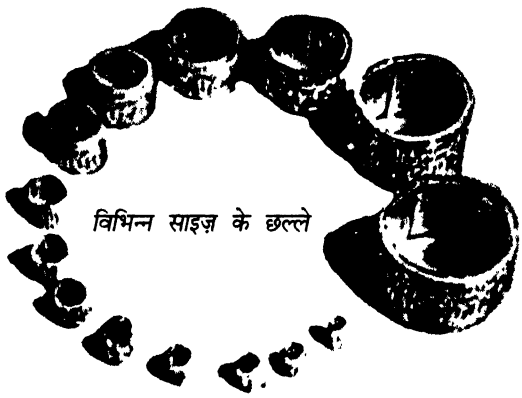

एल्युमिनियम का बना है। प्रवासी पक्षियों को पकड़कर उनके पैरों में इस प्रकार के हल्के छल्ले पहना दिए जाते हैं। इन छल्लों पर यह भी लिखा होता है कि यदि यह पक्षी कहीं मिले (या पकड़ा जाए) तो उस स्थान एवं मिलने या पकड़े जाने की तारीख़ की सूचना किस पते पर दें। ऐसे प्रयोगों से बड़ी रोचक जानकारी मिलती है। ऐसे कुछ पक्षी जिन्हें भारत के दक्षिणी राज्य केरल में छल्ले पहनाए गए थे, ठंड के मौसम में अफग़ानिस्तान की राजधानी काबुल में पकड़े गए। इसी प्रकार कुछ पक्षी जिन्हें भरतपुर, राजस्थान में छल्ले पहनाए गए थे, रूस के कज़ाकिस्तान प्रांत में देखे गए।

अगले पृष्ठ पर एशिया तथा संसार के मानचित्र दिए गए हैं। उनमें तुम इन स्थानों को ढूंढकर दूरी का अंदाज़ा लगा सकते हो।

उड़ने की क्षमता, गति और ऊंचाई

पक्षियों के उड़ने की गति और ऊंचाई का पता लगाने के लिए हवाई जहाज़ और रडार की मदद ली जाती है। प्रवासी पक्षी अपने प्रवास के दौरान आम तौर पर एक दिन में 6 से 11 घंटे तक लगातार उड़ते रहते हैं। पर कुछ पक्षी ऐसे भी हैं जो बिना कहीं रुके हज़ारों किलोमीटर की दूरी तय करते हैं।

प्रवासी पक्षी प्रायः पृथ्वी से 400 मीटर की ऊंचाई पर उड़ते हैं, लेकिन कभी-कभी वे 900 मीटर की ऊंचाई पर उड़ते हुए भी पाए गए हैं। जो प्रवासी पक्षी भारत में ठंड का मौसम और हिमालय पार के क्षेत्रों (रूस, चीन, अफग़ानिस्तान) में गर्मी का मौसम बिताते हैं उन्हें तो इससे भी अधिक ऊंचाई पर उड़ना पड़ता है। उन्हें इन प्रदेशों में जाने के लिए हिमालय पर्वत श्रृंखला के पूर्वी छोर पर स्थित ब्रह्मपुत्र घाटी या पश्चिमी छोर पर स्थित सिंधु घाटी से होकर गुजरना पड़ता है। तुमने भूगोल में पढ़ा होगा कि कई नदियां पहाड़ों के बीच में स्थित दर्रों में से होकर बहती हैं। ऐसे दर्रों में से उड़कर आने वाले पक्षियों को अधिक ऊंचाई पर नहीं उड़ना पड़ता। किंतु कुछ जातियों की बत्तखें सीधे हिमालय की ऊंची चोटियों को लांघ कर आती हैं। इन चोटियों की ऊंचाई 3,000 से 6,000 मीटर (लगभग 10,000 से 20,000 फीट) होती है।

प्रवासी पक्षियों का रास्ता

यदि हम देश के किसी एक स्थान को चुनकर वहां के पक्षियों का पूरे वर्ष तक अवलोकन करें और उनकी सूची बनाते जाएं तो कई रोचक तथ्य सामने आएंगे। उदाहरण के लिए हम भोपाल को चुनते हैं।

भोपाल में अप्रवासी पक्षी पूरे वर्ष दिखाई पड़ते हैं जैसे कौआ, देसी मैना, गौरैया, चील, गिद्ध, अबलख मैना आदि। इनके अलावा भोपाल में कुछ पक्षी ठंड का मौसम शुरू होने पर दिखाई पड़ते हैं और गर्मी शुरू होते ही चले जाते हैं। ये वे प्रवासी पक्षी हैं जो ठंड का पूरा मौसम भोपाल में बिताते हैं। कुछ अन्य जातियों के प्रवासी पक्षी ठंड का मौसम शुरू होने पर भोपाल में कुछ दिनों के लिए दिखाई पड़ते हैं और फिर कहीं चले जाते हैं। फिर वे गर्मी के मौसम के प्रारंभ में कुछ दिनों के लिए दिखाई पड़ते हैं। वास्तव में ये वे प्रवासी पक्षी हैं जो उत्तर से आते हुए भोपाल में कुछ दिन के लिए रुकते हैं और फिर दक्षिण की ओर बढ़ जाते हैं। दक्षिण में ठंड का पूरा मौसम बिताकर फिर गर्मी के मौसम में उत्तर की ओर लौटते हुए कुछ दिनों के लिए भोपाल में रुकते हैं। कुछ प्रवासी पक्षी भोपाल में केवल एक ही बार या तो ठंड की शुरूआत में या फिर गर्मी की शुरूआत में दिखाई पड़ते हैं। ये वे पक्षी हैं जो उत्तर से दक्षिण की ओर या दक्षिण से उत्तर की ओर अलग-अलग रास्तों से जाते हैं। यदि भोपाल इनके उत्तर-दक्षिण रास्ते पर हो तो वे यहां ठंड के प्रारंभ में दिखाई पड़ते हैं, और यदि दक्षिण-उत्तर रास्ते पर हो तो गर्मी के प्रारंभ में।

प्रवासी पक्षियों की इस प्रकार की आवाजाही उत्तर, पूर्व, पश्चिम और मध्य भारत के किसी भी स्थान पर देखी जा सकती है। मध्यप्रदेश में भी चाहे मंदसौर या खंडवा हो, चाहे जबलपुर या बिलासपुर, चाहे ग्वालियर—सभी स्थान (चाहे वे शहर हों या गांव) पक्षियों के अवलोकन के लिए उपयुक्त हैं।

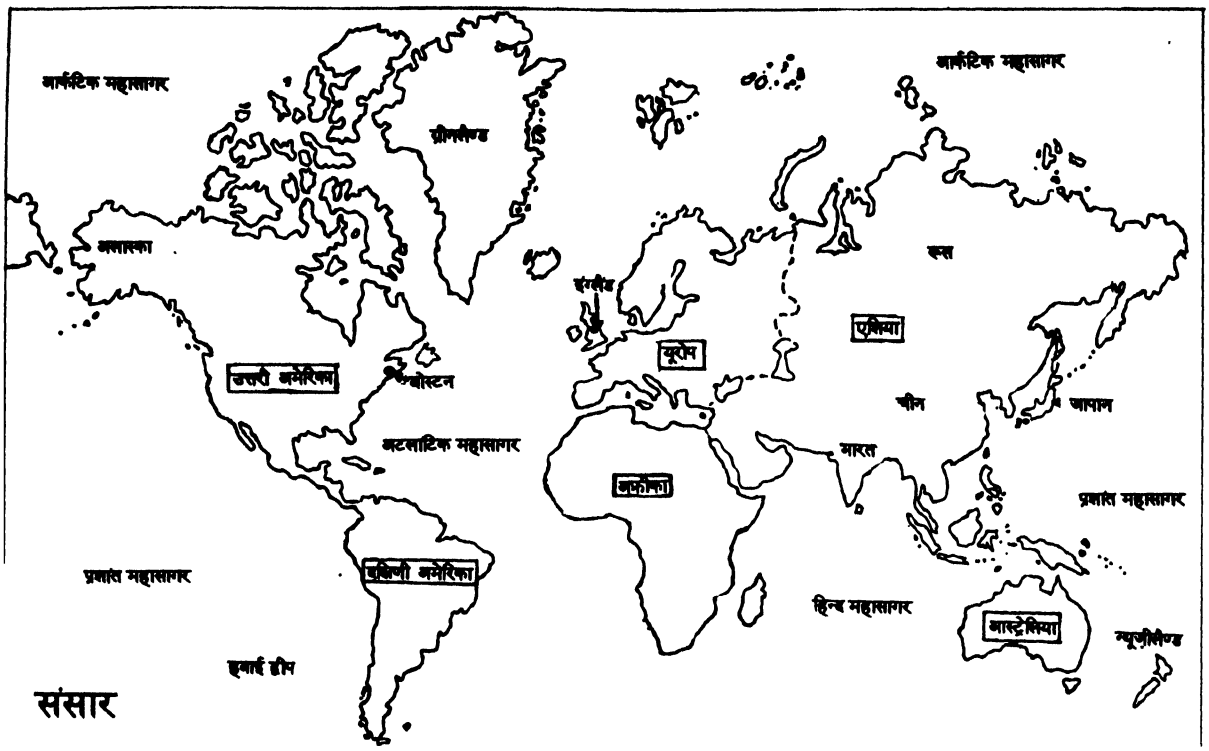

इन पक्षियों के निवास और प्रवास स्थान इन मानचित्रों में ढूंढ सकते हो।

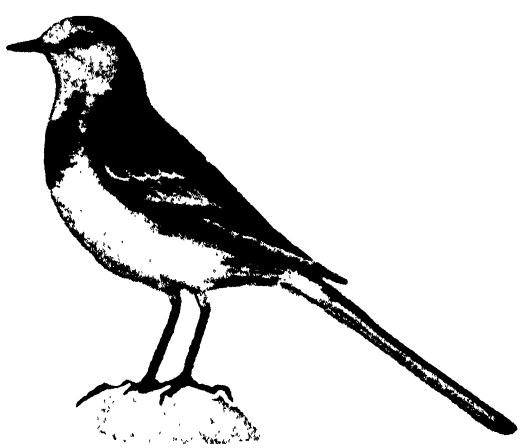

बंबई के एक बगीचे में एक वर्ष ठंड के मौसम में *'खंजन'* जाति के एक पक्षी की टांग में छल्ला पहना दिया गया। गर्मी का मौसम शुरू होने पर यह पक्षी उड़कर बंबई से 2000 किलोमीटर दूर हिमालय पर्वत पर चला गया। उसके बाद लगातार पांच साल तक वही पक्षी उसी बगीचे में सितबर माह की एक निश्चित तारीख को लौटता रहा।

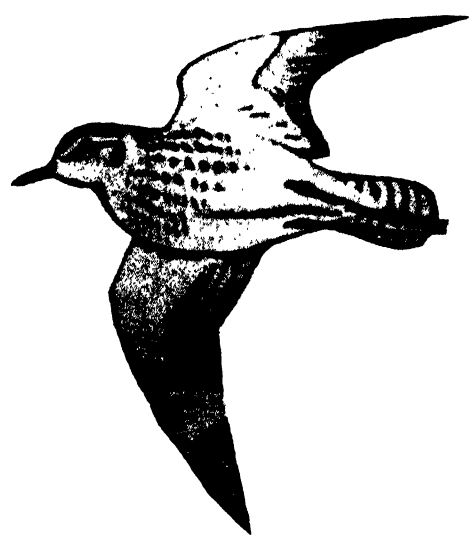

'गोल्डन प्लवर' नामक पक्षी अमरीका के उत्तरी छोर पर स्थित अलास्का प्रांत से प्रशांत महासागर में स्थित हवाई द्वीप तक की 3200 किलोमीटर की दूरी बिना कहीं रुके पूरी करता है। फिर गर्मियों में वापसी के दौरान भी वह यही दूरी बिना रुके या विश्राम किए तय करता है।

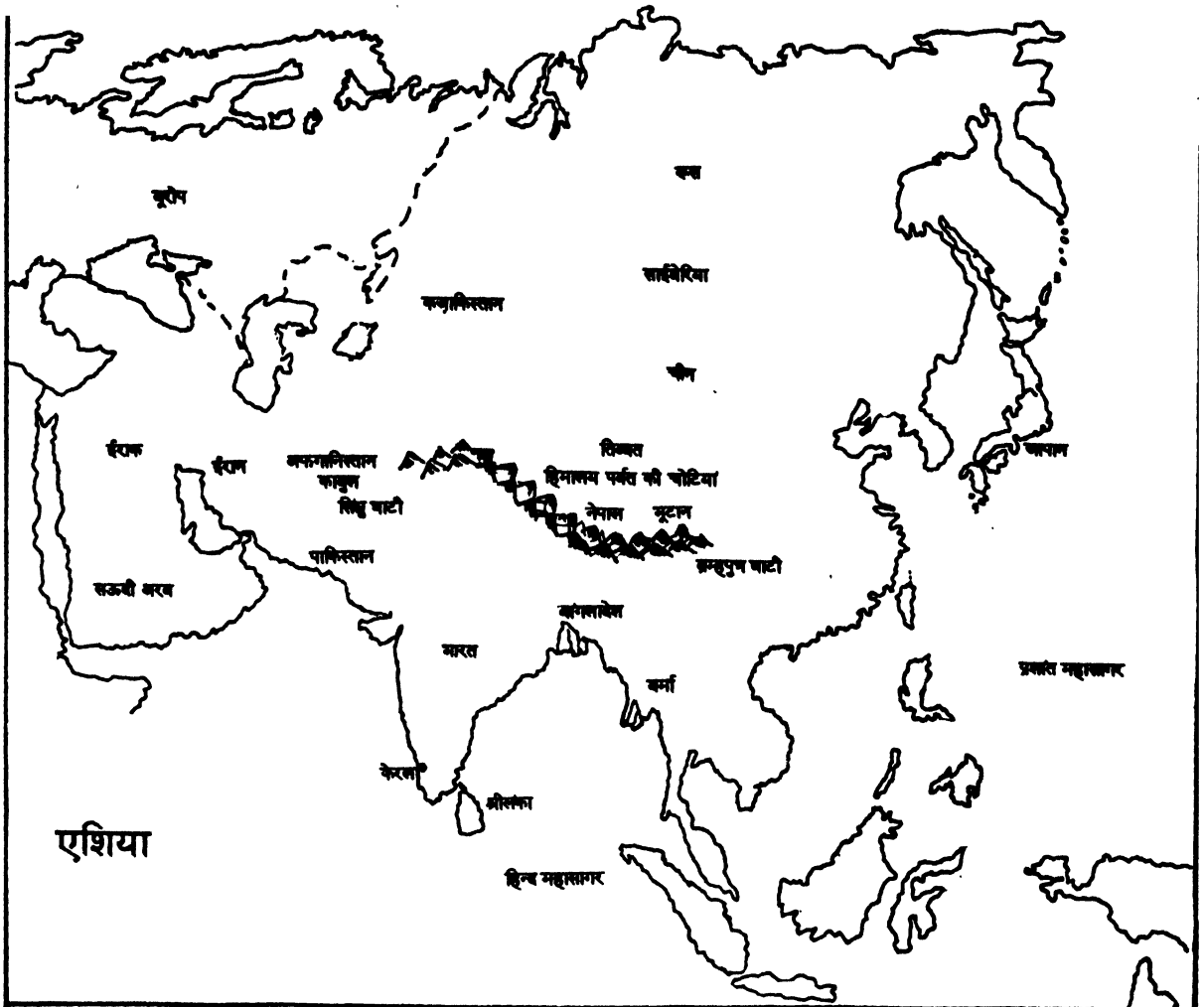

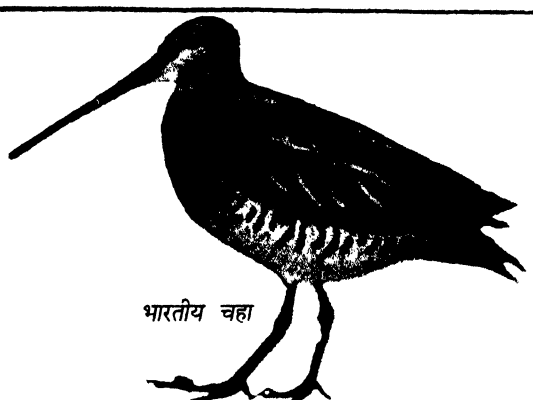

भारतीय चहा

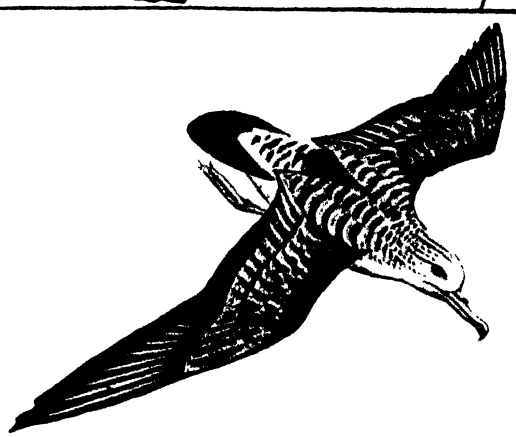

जापान में गर्मी का मौसम बिताने वाला *'चहा'* जाति का पक्षी ठंड के मौसम में लगभग 5000 किलोमीटर दूर स्थित ऑस्ट्रेलिया पहुंचता है। चूंकि यह पक्षी अन्य किसी स्थान पर दिखाई नहीं देता, इससे पता चलता है कि वह इस दूरी को समुद्र पर से उड़कर बिना विश्राम किए तय करता है!

'शियर वॉटर' जाति के एक पक्षी को इंग्लैंड में पकड़ा गया और उसे हवाई जहाज़ से 5000 किलोमीटर दूर अमरीका के बोस्टन शहर ले जाकर छोड़ दिया गया। 12 दिन बाद यही पक्षी इंग्लैंड में अपने घोंसले में बैठा हुआ पाया गया।

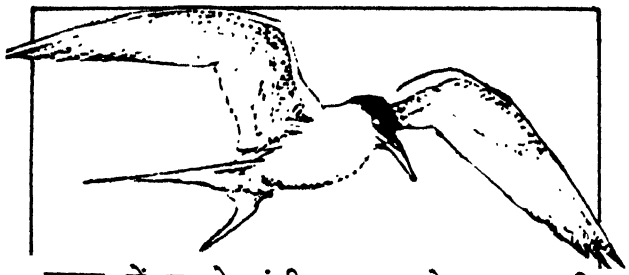

साल में सबसे लंबी यात्रा करने वाला पक्षी *'आर्क्टिक टर्न'* है जो गर्मी का मौसम पृथ्वी के उत्तर ध्रुवीय प्रदेशों में बिताता है। और ठंड के मौसम में लगभग 18,000 किलोमीटर उड़कर दक्षिण ध्रुवीय प्रदेशों में पहुंचता है। इस प्रकार कुल मिलाकर यह पक्षी प्रतिवर्ष 36,000 किलोमीटर की उड़ान भरता है।

प्रवास की नियमितता और उड़ान का क्रम

पक्षियों के प्रवास के बारे में दो रोचक तथ्य और हैं। पहली बात तो यह है कि अपने प्रवास में पक्षी बड़े नियमित होते हैं। जो पक्षी पिछले वर्ष जहां पहुंचा था उसी स्थान पर, और जहां तक हो सके उसी दिन पहुंचने का प्रयास करता है।

दूसरा रोचक तथ्य उड़ान के क्रम के बारे में है। जैसा कि तुमने पढ़ा, जब प्रवासी पक्षी गर्मी के मौसम में उत्तर की ओर स्थित ठंडे प्रदेशों में पहुंचते हैं तो वे वहां प्रजनन भी करते हैं। जब फिर से दक्षिण के गर्म प्रदेशों की ओर उड़ने का समय होता है तब सारा परिवार एक साथ यात्रा पर रवाना नहीं होता। सबसे पहले वयस्क नर पक्षी उड़ान पर निकलते हैं, फिर वयस्क मादा पक्षी उड़ान भरते हैं और सबसे अंत में बच्चे रवाना होते हैं। इसी प्रकार जब गर्मी के मौसम में उत्तर की ओर उड़ान भरनी होती है तब सबसे पहले अवयस्क पक्षी रवाना होते हैं, फिर वयस्क मादा और फिर वयस्क नर!

प्रवासी पक्षियों के बारे में दो ऐसे प्रश्न भी हैं जिनके उत्तर खोजने में वैज्ञानिक अभी तक पूरी तरह सफल नहीं हो पाए हैं।

पहला प्रश्न तो यह है कि अपने लंबे प्रवास के दौरान पक्षी अपना सही रास्ता कैसे जान लेते हैं? और वे बच्चे जो अपने जन्म के बाद पहली बार प्रवास पर जाते हैं, उनके साथ उनके माता-पिता भी नहीं होते हैं वे भला कैसे सही स्थान पर पहुंच जाते हैं?

वयस्क पक्षियों द्वारा भी सही रास्ता खोज लेना जीव-जगत के महान आश्चर्यों में से एक है। अपनी उड़ान के दौरान प्रवासी पक्षी समुद्रों और पहाड़ों के ऊपर से गुजरते हैं। इन स्थानों पर पहचान के कोई निशान नहीं होते हैं। पहाड़ों की बर्फ़ से ढकी चोटियां सब ओर एक-सी दिखाई पड़ती हैं। समुद्र में तो हज़ारों किलोमीटर तक जल की सपाट सतह के सिवाय कुछ होता ही नहीं है। कई बार तो नक्शों और दिशा सूचक यंत्रों से लैस हवा और पानी के जहाज़ भी भटक जाते हैं। किंतु ऐसे बहुत कम उदाहरण देखे गए हैं जब पक्षी अपने प्रवास के दौरान भटक गए हों। यदि इन्हें चकमा देने की कोशिश की जाए तब भी ये चक्कर में नहीं आते हैं।

कई अप्रवासी पक्षी भी अपना रास्ता ढूंढने में माहिर होते हैं। कबूतर प्रवासी पक्षी नहीं है, किंतु तुमने सुना होगा कि कबूतरों का उपयोग संदेश वाहकों के रूप में किया जाता है। यदि ऐसे किसी कबूतर को उसके परिचित स्थान से 1000 किलोमीटर की दूरी पर छोड़ दिया जाए तो वह एक या दो दिन में अपने स्थान पर लौट आता है।

इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए वैज्ञानिकों ने कई रोचक प्रयोग किए। इन प्रयोगों का यहां विवरण देना तो संभव नहीं है, किंतु इन प्रयोगों से जो निष्कर्ष निकले वे संक्षेप में कुछ इस तरह हैं :

(1) दिन में उड़ने वाले पक्षी सूर्य की स्थिति देखकर दिशा ज्ञान करते हैं।

(2) रात में उड़ने वाले पक्षी विभिन्न तारों और तारामंडलों की सहायता से अपना रास्ता निर्धारित करते हैं।

(3) पक्षियों में चुंबकीय तरंगों को पकड़ने की क्षमता होती है और सूर्य या तारे दिखाई न भी पड़ें तो वे पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र की सहायता से दिशा ढूंढ लेते हैं।

हालांकि ये निष्कर्ष वैज्ञानिकों को पूरी तरह संतुष्ट नहीं कर पाए हैं। ऐसे संकेत मिले हैं कि कई अन्य कारक जैसे वातावरण में हवा का दबाव, हवा के बहाव की दिशा आदि भी पक्षियों को अपना रास्ता तथा उसकी दिशा ढूंढने में सहायक होते हैं। इस पहेली को पूरी

(शेष पृष्ठ 25 पर)

तुम भी बनाओ

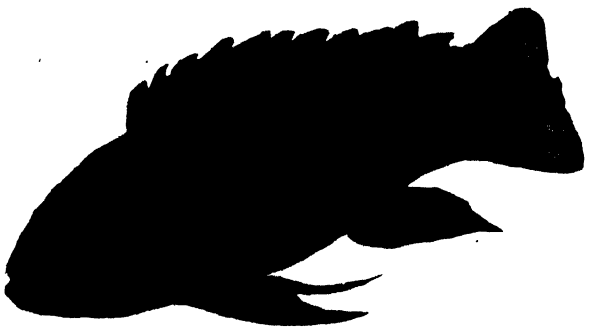

चित्र बनाने या चितरने में तुम सबको मज़ा आता होगा। इस मज़े को दुगना कर सकते हो इस स्तंभ में। देखो एक साधारण मछली का चित्र कितनी आसानी से बन सकता है।

1

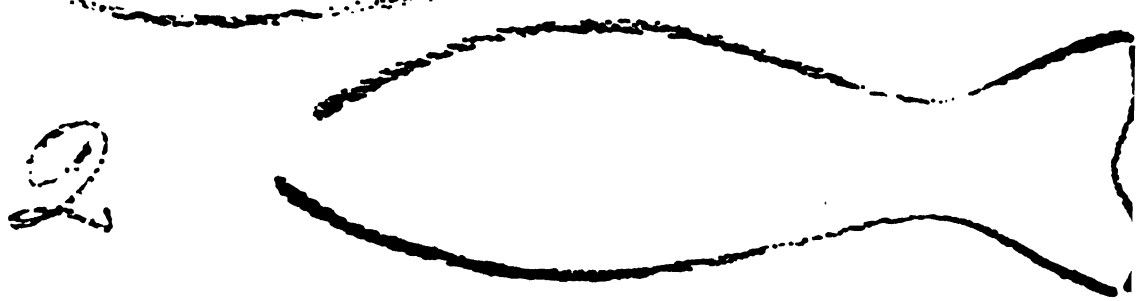

2

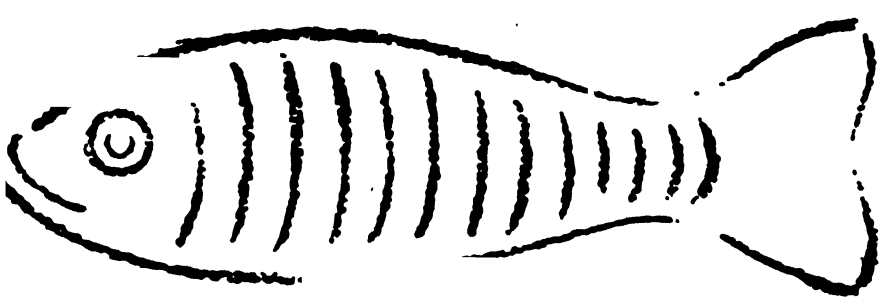

3

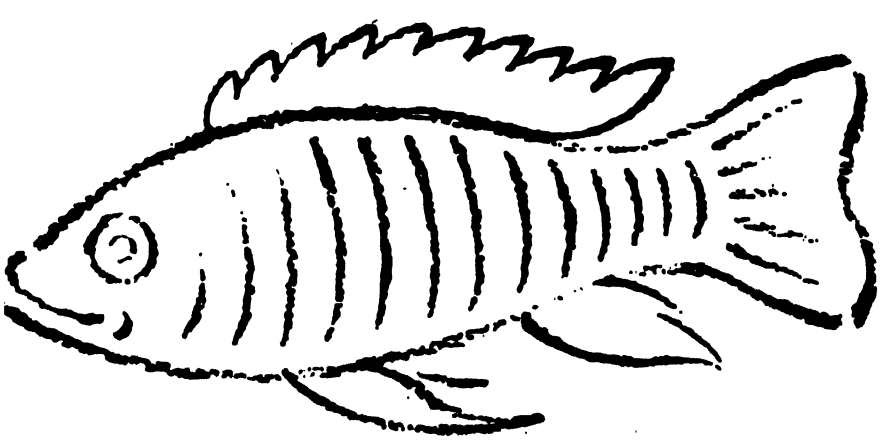

4

मिट्टी

माटी कहे कुम्हार से तू क्या तू क्या रूंधे मोय
एक दिन ऐसा आएगा मैं रूंधूंगी तोय!

कबीर का यह दोहा यूं तो अपने में दुनिया भर का दर्शन समेटे है। पर इसमें एक साधारण सी बात भी है कि हमारा शरीर मृत होने के बाद गलकर या जलकर मिट्टी में ही मिल जाता है।

पर हवा और पानी के समान ही मिट्टी भी हमारे जीवन में इस तरह घुल-मिल गई है कि हम इसकी तरफ ध्यान तक नहीं देते। बस उपयोग किए चले जाते हैं। ज़रा अपने चारों और नज़र दौड़ाओ और देखो तो मिट्टी के कितने उपयोग हैं।

पर क्या हर प्रकार की मिट्टी का हरेक काम के लिए उपयोग हो सकता है? उदाहरण के लिए क्या हर तरह की मिट्टी घड़े (मटके या सुराही) बनाने के काम आ सकती है? इसी तरह तुमने सुना होगा कि ख़ास फ़सलों और पेड़-पौधों के लिए, ख़ास तरह की मिट्टी की आवश्यकता होती है। कुछ और इसी प्रकार के उदाहरण ढूंढो जिससे यह पता चले कि ख़ास उपयोगों के लिए अलग-अलग प्रकार की मिट्टी की ज़रूरत होती है।

आओ मिट्टी के बारे में कुछ मज़ेदार बातें पता करें—प्रयोगों के द्वारा।

सबसे पहले कुछ अलग-अलग स्थानों की मिट्टी इकट्ठी करो। जैसे, खेत, खुला मैदान, बगीचा, जंगल, पड़ती ज़मीन तथा नदी, सड़क और तालाब के किनारे की। नमूने इकट्ठे करने के लिए पोलीथीन की थैलियां उपयोग में ला सकते हो। हर नमूने के साथ जगह के नामों की पर्चियां डाल देना।

मिट्टी के इन नमूनों में तुम किन-किन गुणधर्मों की जांच कर सकते हो—सोचो तो! वैसे कुछ गुणधर्म ये भी हो सकते हैं —

1. मिट्टी देखने में कैसी लगती है? बारीक, डिग्गल वाली या चूरा?
2. रंग कैसा है? काला, भूरा या कोई और!
3. छूने या दबाने से मिट्टी कैसी लगती है? कड़ी, लचीली, भुरभुरी या चिपचिपी?
4. सूंघने में कैसी है? सौंधी, बदबूदार या कोई गंध नहीं है?
5. अगर लेंस हो तो उससे देखो। क्या कुछ नई चीज़ या नई बात पता चलती है?
6. मिट्टी के नमूने में कोई जीव दिखाई पड़ता है?
7. क्या मिट्टी में जीव या पौधों के सड़े हुए अवशेष भी मिलते हैं?

इनके अलावा तुम्हें और जो भी गुणधर्म या बातें महत्वपूर्ण लगती हों उन्हें भी देखो। चाहो तो इन सबके लिए एक तालिका बना लो।

अब ज़रा दो-तीन सवालों पर विचार करो। क्या कोई जीव मिट्टी में मिले? यदि हां, तो इनका मिट्टी में क्या महत्त्व हो सकता है? सड़े-गले पेड़-पौधों या जंतुओं का क्या महत्त्व हो सकता है? क्या एक ही मिट्टी के सारे कण एक बराबर हैं?

आखिरी सवाल का उत्तर पाने के लिए एक छोटा-सा प्रयोग कर सकते हैं। अपने किसी नमूने की

नीचे के रेखा चित्र के आधार पर मिट्टी के प्रकार का पता लगाओ।

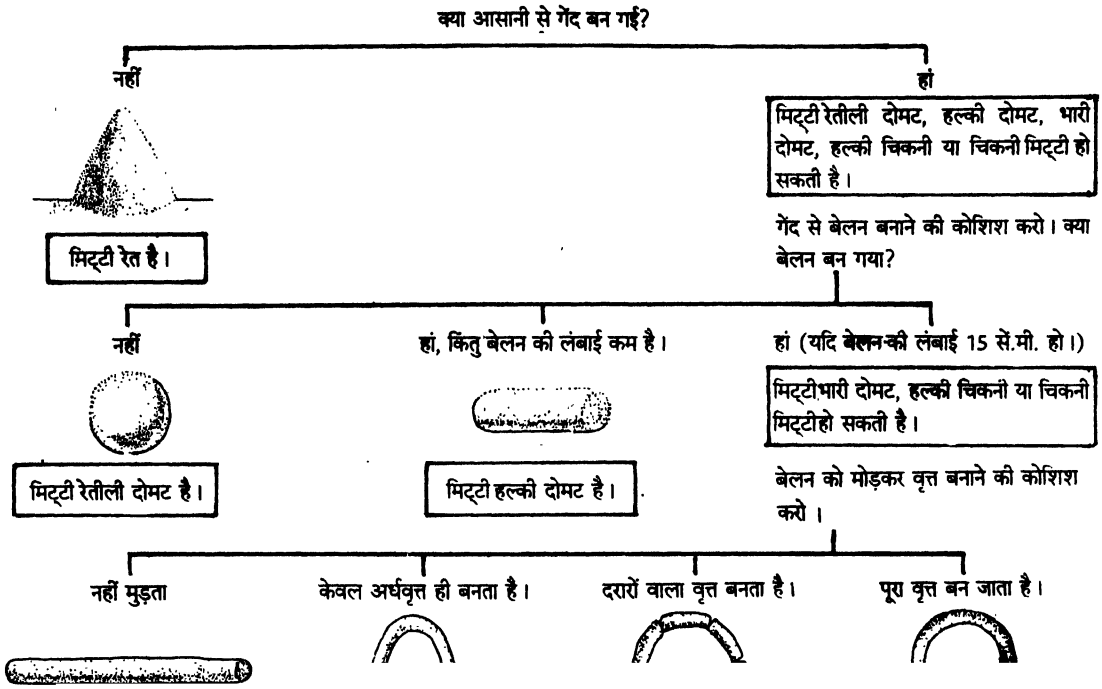

हल्की चिकनी मिट्टी है।

थोड़ी-सी मिट्टी लो। इसके डलों को कूट-कूट कर चूरा बना लो। अब कांच के गिलास में तीन-चौथाई पानी भरकर उसमें आधी मुट्ठी मिट्टी डाल दो। किसी डंडी से हिलाकर मिट्टी को अच्छी तरह पानी में घोल दो। अब इसे आधे घंटे के लिए बिना हिलाए-डुलाए रखा रहने दो।

आधे घंटे बाद इसका अवलोकन करो। क्या गिलास में अलग-अलग साइज़ के कणों की परत दिखती हैं? ध्यान से देखो। किस साइज़ के कण अधिक हैं? कणों के साइज़ के आधार पर हम मिट्टी का वर्गीकरण कर सकते हैं। यदि मिट्टी में बड़े साइज़ के कणों की मात्रा ज़्यादा हो, तो उसे रेतीली मिट्टी कहते हैं, यदि बारीक कणों की मात्रा ज़्यादा हो, तो उसे

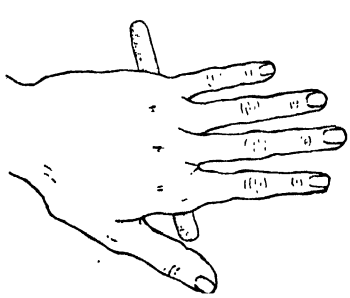

चिकनी मिट्टी कहते हैं। जब बारीक और मोटे कण लगभग बराबर मात्रा में मिले हों तो ऐसी मिट्टी को दोमट कहते हैं।

कौन-सी मिट्टी किस प्रकार की है, यह जानने के लिए एक आसान-सा प्रयोग कर सकते हो!

लाई गई मिट्टी के किसी एक नमूने में से लगभग 20-25 ग्राम मिट्टी लो। इसमें से कंकड़, पत्थर, घास वगैरह निकालकर फेंक दो। अब इसमें थोड़ा-थोड़ा पानी डालो और सानते जाओ। पानी इतना डालो कि मिट्टी का गोला बन जाए पर हाथ में चिपके नहीं। इस मिट्टी से लगभग 2.5 सेंटीमीटर व्यास की एक गेंद बना लो। अब किसी समतल पटिए पर गेंद को रखकर 15 सेंटीमीटर लंबा एक बेलन बनाने की कोशिश करो। यदि यह बेलन बग़ैर टूटे मुड़ सकता है, तो इससे एक वृत्त बना लो। मिट्टी को जिस हद तक ढाला जा सकता है, उससे हमें मिट्टी के प्रकार का पता चलता है। यहां दिए रेखा चित्र के आधार पर तुम मिट्टी के प्रकार का पता लगा सकते हो।

(सामग्री व चित्र : होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम की कक्षा आठ की पाठ्यपुस्तक 'बालवैज्ञानिक' से।)

वृक्ष

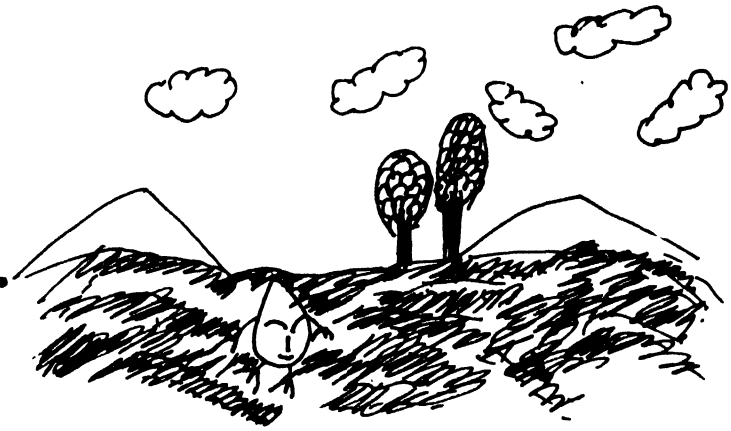

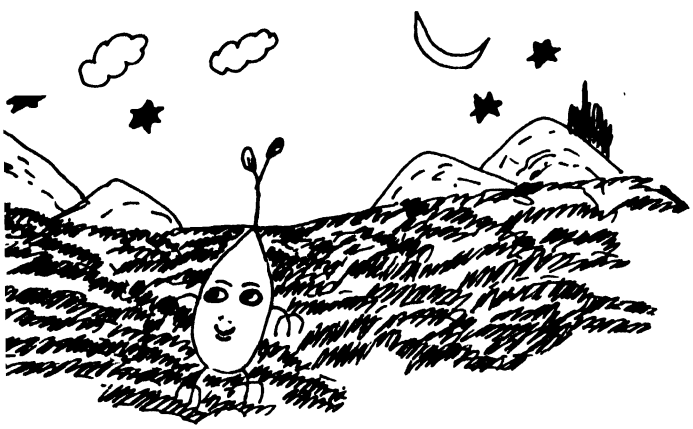

अंकुर मिट्टी में सोया था
सपने में खोया था
नन्हा बीज हवा ने लाकर
एक जगह बोया था

तभी बीज ने ली अंगड़ाई
देह ज़रा सी पाई
आंख खोलकर बाहर आया
दुनिया पड़ी दिखाई

खाद मिली, पानी भी पाया
ऐसे जीवन आया
ऊपर बढ़ा उधर, धरती में
नीचे इधर समाया

तने, डालियां, पत्ते आए
और फूल मुसकाए
नन्हा बीज वृक्ष बन करके
धरती पर लहराए

जीता, मरता, रोगी होता
दुख आने पर रोता
वृक्ष सांस लेता, बढ़ता है
जगता है, फिर सोता

रोज़ शाम को चिड़ियां आतीं
सारी रात बितातीं
बड़े सवेरे जाग वृक्ष पर
चीं चीं चीं चीं गातीं

छाया आती, बड़ी सुहानी
सब टोली जुट जाती
तरह तरह के खेल, वृक्ष के
नीचे बैठ रचाती।

□ श्री प्रसाद

सभी चित्र : श्रद्धा सिद्धा

न है ? जब हमारा दांत टूट जाता है तो क्या होता है ?

बच्चों के पहले दांत उनके बड़े दांतों के ऊपर लगे होते हैं। कुछ सालों में बड़े दांत उगने लगते हैं और छोटे दांतों को गिरा देते हैं। फिर धीरे धीरे बड़े दांत बाहर आ जाते हैं। इन दांतों की हमें खूब देख भाल करनी चाहिए क्यों कि इनके टूटने पर दूसरे दांत नहीं आएंगे।

दांत कैसे बढ़ते हैं

कुछ जानवर, जैसे कि घोड़ा और शेर, मनुष्यों की तरह एक बार अपने दांत बदलते हैं, यानि उनके बचपन के दांत गिर जाते हैं और बड़े दांत आते हैं। सांप और मगरमच्छ अपने जीवन में कई बार दांत बदल लेते हैं।

□ चित्र, शब्द एवं सज्जा : स्मिता अग्रवाल, जयपुर

माता-पिता और शिक्षक के लिए

बच्चों के दूध के दांत करीब सात महीने की उम्र से आने लगते हैं और तीन साल की उम्र होते होते बीस दांत आ जाते हैं। छह साल की उम्र में बच्चों के दूध के दांत गिरने शुरू होते हैं और बड़े दांत आने लगते हैं। अब बच्चे की दाढ़ें भी आने लगती हैं। ऊपर और नीचे के जबड़े में दोनों तरफ तीन-तीन दाढ़ें आती हैं। कुल 32 दांत होते हैं।

चलो अपने दांत गिनते हैं

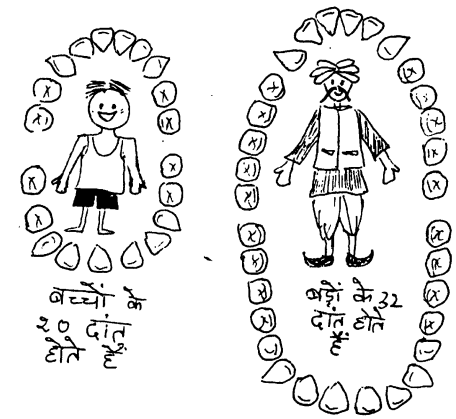

जानवर भी अपने दांत बदलते हैं

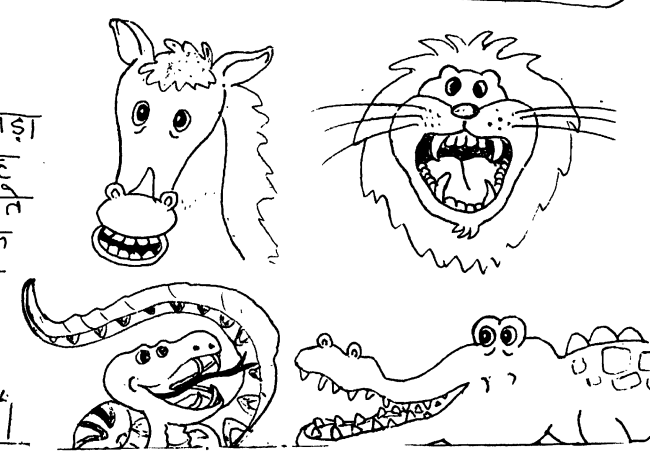

नया धारावाहिक

भूगर्भ की यात्रा

रविवार 24 मई सन् 1963 को मेरे चाचा, प्रोफ़ेसर लिडेनब्रॉक, हेम्बर्ग के पुराने भाग में स्थित 19 नम्बर वाले अपने छोटे से मकान में लौट आए।

मेरी रसोईदारिन, मार्था, समझी कि शायद भोजन तैयार करने में उसे कुछ देर हो गई। मैंने सोचा, "अब बड़ी परेशानी होगी यदि मेरे चाचा भूखे होंगे, क्योंकि वे उन लोगों में से थे जो सदैव ही व्यस्त रहते हैं।"

वह बेचारी कुछ डरे हुए स्वर में बोली, "क्या मि. लिडेनब्रॉक वापस आ गए?"

"हां मार्था, लेकिन निःसंदेह ही भोजन अभी तैयार नहीं हो सकता क्योंकि अभी डेढ़ ही तो बजे हैं।"

"तब मि. लिडेनब्रॉक, घर इतनी जल्दी क्यों लौट आएं?" मार्था ने पूछा।

"वे खुद ही हमें बताएंगे," मैंने कहा।

"वे आ रहे हैं। मैं रसोई में वापस जाती हूं। आप ही उनसे पूछ लीजिएगा कि वे इतनी जल्दी घर कैसे लौट आए और उनसे यह भी कह दीजिएगा कि उन्हें अभी भोजन क्यों न मिल सकेगा।"

मैं अकेला था, लेकिन व्यस्त प्रोफ़ेसर साहब को सब कुछ समझा देने के लिए मैं अपने को तैयार नहीं अनुभव कर रहा था। मैं उनसे बचने के लिए अपने छोटे से कमरे को जाने वाली सीढ़ियों की ओर जा ही रहा था कि तभी वे दौड़ते हुए आए और मेरे पास से गुजरते ही छड़ी एक किनारे फेंक कर हैट को मेज़ पर रखते हुए मुझसे बोले, "ज़रा जल्दी से मेरे पीछे आओ।"

मेरे चलने के पहले ही उन्होंने एक बार फिर व्यस्त स्वरों में अपना आदेश दोहराया।

मैं कूद कर उनके कमरे में जा पहुंचा।

प्रोफ़ेसर लिडेनब्रॉक कोई बुरे व्यक्ति नहीं थे। पर वे क्रोधी स्वभाव के अवश्य थे और खुश बड़ी कठिनाई से हो पाते थे।

वे युनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर थे, और भूगर्भशास्त्र पढ़ाया करते थे। पढ़ाते समय हमेशा ही क्रुद्ध हो जाया करते थे। वे इसकी चिंता न करते थे कि उनके छात्र काम ठीक से करते हैं या नहीं, उनके व्याख्यान पर ठीक से ध्यान देते हैं या नहीं या कि परीक्षा में सफल

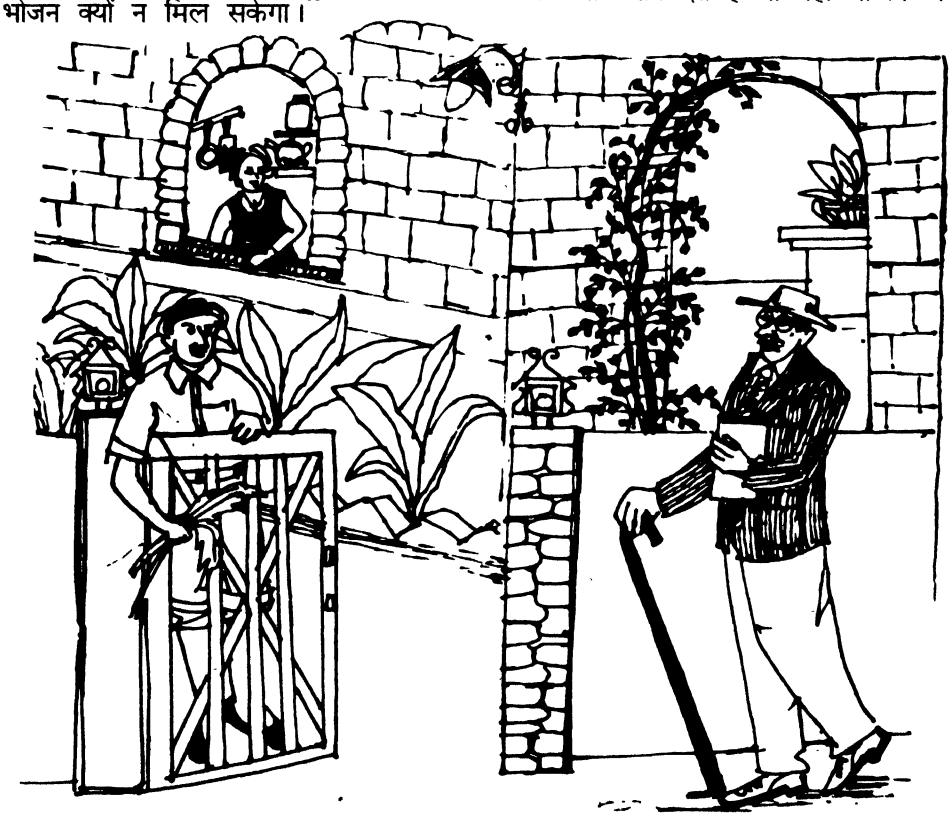

होते हैं या असफल। ऐसी बातें उन्हें कभी भी परेशान नहीं करती थीं। वे अपने ही तरीके से पढ़ाते थे और अपने मन में प्रसन्नता का अनुभव करते थे। दूसरे लोग उनके पढ़ाने के विषय में क्या सोचते हैं या क्या सीखते हैं, इसका उनकी दृष्टि में कोई मूल्य न था।

जर्मनी में इस प्रकार के कई प्रोफ़ेसर हैं।

दुर्भाग्यवश मेरे चाचा बोलने में, कम से कम जनता के सामने बोलने में कुछ कठिनाई का अनुभव करते थे। जनता के बीच बोलनेवालों के लिए यह दुर्भाग्य की बात है। जब कोई लंबा वैज्ञानिक शब्द उनके मुख से न निकल पाता तब वे निश्चय ही उबल पड़ते थे। युनिवर्सिटी में व्याख्यान देते समय भी प्रायः वे हकलाने लगते थे।

भूगर्भशास्त्र में बहुत से कठिन शब्द आते हैं—आधे ग्रीक और आधे लैटिन, लंबे, विचित्र। ऐसे-ऐसे शब्द जो कि बोलनेवाले के मुख और सुनने वाले के कानों को चोट सी पहुंचाएं।

उनके विद्यार्थी भली भांति जानते थे कि मेरे चाचा बोलने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। वे लोग इसके उदाहरण सुनाया करते थे। वे यह जानते हुए भी कि अब क्या होगा, ऐसे उदाहरणों की प्रतीक्षा करना पसंद करते थे और जब प्रोफ़ेसर साहब को गुस्सा आ जाता वे सब हंस पड़ते थे। संभवतः इसी परिस्थिति का आनंद लेने के लिए बहुत से छात्र मेरे चाचा जी का व्याख्यान सुनने आया करते थे। वे सब मेरे चाचा की योग्यता से अधिक उनके गुस्से को अधिक पसंद करते थे। जो भी हो, यह मैं कह सकता हूं कि मेरे चाचा एक सच्चे वैज्ञानिक पुरुष थे।

यदि आप उन्हें परीक्षण के लिए कोई पत्थर देते तो वे उसे देखकर कुछ मनन करते या ठोंक कर उसकी ध्वनि सुनते या उसे सूंघ कर देखते। हर दशा में वे आपको बता देते कि वह क्या था, किस चीज़ का था और शायद यह भी कि वह आया कहां से था। अब तक 600 किस्म के पत्थर जाने जा सके हैं और मेरे चाचा बता देंगे कि यह पत्थर उनमें से किस प्रकार का है। बड़े-बड़े वैज्ञानिक उन्हें अपने यहां आमंत्रित करते रहते थे और उनसे अपनी समस्याओं के विषय में सलाह लेते रहते थे। उन्होंने अनेक बड़े ही महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक आविष्कार किए थे।

इस प्रकार के आदमी वे थे, ज़िन्होंने इतनी व्यस्तता से मुझे उस समय पुकारा था।

वे एक लंबे, दुर्बल और फ़ौलाद जैसे शरीर वाले व्यक्ति थे और 50 वर्ष की अवस्था में भी 40 वर्ष के दिखाई देते थे। चश्मे के बड़े-बड़े शीशों के पीछे उनकी बड़ी-बड़ी आंखें दिखाई देती थीं। उनकी पतली सी नाक देखकर चाकू की नोक याद आती थी।

कुछ लोगों का कहना है कि उनकी नाक एक प्रकार का चुंबक थी जिसमें छोटे-छोटे फ़ौलाद के टुकड़े चिपक जाएं। लेकिन मैं आपको बता सकता हूं कि यह सच नहीं था। वे तीन फुट प्रति क़दम के अनुसार चलते और चार फुट प्रति क़दम के अनुसार दौड़ते थे।

वे हेम्बर्ग के सबसे पुराने और बीच वाले भाग में अपने छोटे से मकान में रहते थे। यद्यपि वे थे तो केवल एक प्रोफ़ेसर ही, फिर भी धन-धान्य की उन्हें कमी न थी। मकान उनका खुद का था, और उसका सारा सामान भी। चाचा जी के साथ उनकी 17 वर्ष की चचेरी बहन ग्राबिन तथा मार्था रहती थी। चूंकि मेरे माता-पिता मर चुके थे अतः मैं भी उन्हीं के साथ रहता था और उनके काम में सहायता करता था।

मैं आपको बता देना चाहता हूं कि मैं भूगर्भशास्त्रप्रेमी हूं और पत्थरों और चट्टानों के बीच रहकर कभी भी थकान का अनुभव नहीं करता। मालिक के इतना व्यस्त रहने पर भी कुल मिलाकर उस छोटे से मकान में बहुत सुखपूर्वक रह सकना संभव था। यद्यपि वे अपने प्रेम को बेहद भद्दे रूप में प्रदर्शित करते थे फिर भी वे मुझे प्यार करते थे। वास्तविकता यह थी कि वे

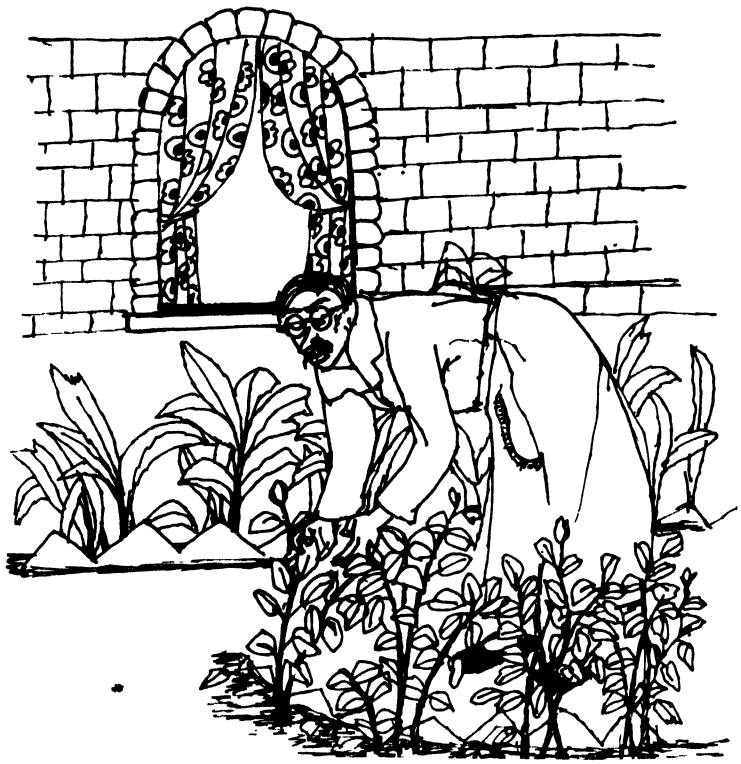

ऐसे आदमी थे जो कि प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे और बहुत ही जल्दबाज़ थे। जब अप्रैल में उन्होंने फूल लगाए तो रोज़ ही सुबह जाकर उनकी पत्तियां खींचा करते थे जिससे कि वे बहुत जल्दी बढ़ जाएं।

अतः जब मेरे चाचा ने मुझे बुलाया तो मेरा एकमात्र कर्तव्य था—उनकी आज्ञा का पालन करना। मैं तुरंत उनके कमरे में चला गया।

कमरा क्या था एक मुर्दा अजायबघर, जिसमें हर प्रकार के पत्थर अपने नामों के साथ में सजे हुए थे। मैं इन पत्थरों से कितनी अच्छी तरह परिचित था! कितनी ही बार हमउम्र लड़कों के साथ खेलने के बजाय, उन्हें साफ़ करके सजाने में अपना सारा समय लगाकर मैं उन्हें प्रसन्न कर चुका था।

लेकिन इस समय जब मैं कमरे में गया तो इन विचित्र पत्थरों की ओर मेरी दृष्टि न गई। मेरा सारा ध्यान चाचाजी की ओर था। वे लंबे हत्थों वाली कुर्सी पर बैठे थे और एक किताब बड़े ध्यान से देख रहे थे।

"कैसी अच्छी पुस्तक है! कैसी अच्छी पुस्तक है!," वे चिल्लाए।

प्रोफ़ेसर लिडेनब्रॉक और बातों के सिवाय पुस्तक-प्रेमी भी थे। किताबों के विषय में वे पागल जैसे थे; एक पुरानी पुस्तक का उनके लिए कोई मूल्य न था जब तक कि या तो वह कहीं मिलती न हो और या उसे कोई पढ़ न सका हो।

"क्या तुमने इसे अब भी नहीं देखा?" वह कहते गए, "यह एक ख़ज़ाना है! मैंने आज सुबह ही एक पुरानी किताबों की दुकान से इसे ख़रीदा है।"

"आश्चर्यजनक," मैंने उत्तर दिया, लेकिन एक ऐसी पुरानी पुस्तक, जिसका आवरण गंदे पीले चमड़े का हो, के लिए प्रसन्न होने का कोई कारण मेरी समझ में न आया।

प्रश्न पूछते तथा स्वयं ही उसका उत्तर देते हुए बोले, "काफ़ी बढ़िया है। हां, निःसंदेह ही कितनी अच्छी दशा में है? हां, यह पूरी तरह अच्छी दशा में है। क्या यह आसानी से खुल जाती है? हां, किसी भी पृष्ठ पर खुल जाती है। यह पूरी तरह खुल और बंद हो जाती है! और तब जब कि यह छः सौ वर्ष पुरानी है!"

इस सारे प्रश्नोत्तर के समय वे बराबर किताब खोलते और बंद करते रहे थे। मैंने अनुभव किया कि मुझे उसके विषय में कुछ कहना ही चाहिए यद्यपि मैं इस विषय में ज़रा भी रुचि नहीं ले रहा था।

"और इस आश्चर्यजनक पुस्तक का नाम क्या है?" मैंने पूछा।

"इसका नाम?" उन्होंने उत्तर दिया, "इसका नाम

है 'हीम्स क्रिंगला' जिसे छः सौ वर्ष पूर्व के प्रसिद्ध लेखक स्नोर टर्लेसन ने लिखा है। यह नार्वे के राजकुमारों की कहानी है जो कि एक द्वीप पर राज्य करते थे।"

"अच्छा।"

यथासंभव अधिक उत्सुकता दिखाता हुआ बोला, "यह जर्मन भाषा में है, न?"

"जर्मन भाषा में।" प्रोफ़ेसर चिल्लाए, "जर्मन भाषा में क्यों? यह पुस्तक योरोपीय महाद्वीप की सबसे पुरानी भाषा में है।"

"अच्छा, अब समझा," मैंने उत्तर दिया। "क्या यह अच्छी छपी है?"

"छपाई की बात कौन करता है? तुम समझते हो, यह छपी हुई है! तुम मूर्ख हो! यह हस्तलिखित है और 'रयूनिक' लिपि में भी।"

"रयूनिक?"

"हां, क्या तुम रयूनिक का अर्थ नहीं जानते? क्या तुम इस शब्द को मुझसे जानना चाहते हो?"

"नहीं, बिलकुल नहीं," मैंने उत्तर दिया।

लेकिन फिर भी मेरे चाचा जी मुझे समझाने लगे, उसके विषय में। वे जिन्हें जानने की मेरी बिलकुल इच्छा न थी।

(अगले अंक में जारी)

जूलेवर्न के उपन्यास *ए जर्नी इन टू दी सेंटर ऑफ अर्थ* का अनुवाद। अनुवादक : प्रभात किशोर मिश्र। सभी सौजन्य : इंडियन प्रेस, इलाहाबाद। चित्र : शोभा घारे।

(पृष्ठ 14 से आगे)

तरह हल करने के लिए वैज्ञानिकों के प्रयोग जारी हैं!

पक्षियों के प्रवास के जुड़ा दूसरा प्रश्न यह है कि प्रवासी पक्षियों को यह कैसे पता चलता है कि प्रवास पर खाना होने का समय आ गया है? विभिन्न प्रयोगों के द्वारा वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि दिन की लंबाई घटने-बढझने से इनके प्रजनन अंगों में ऐसे परिवर्तन होते हैं जिनके प्रभाव से इन्हें अपना स्थान छोड़कर कहीं और जाने की इच्छा होती है।

पक्षियों के अलावा कुछ कीट, कुछ मछलियां और अन्य जंतु भी प्रवास करते हैं। लेकिन जो नियमितता, जो विविधता और जो अनोखापन पक्षियों के प्रवास में पाया जाता है वह अन्य जंतुओं में नहीं होता।

तुम अपने आसपास नजर दौड़ाओ, कुछ ही दिनों में प्रवासी पक्षियों को पहचानने लगोगे। जरा सोचो, ये तुम्हारे घर-आंगन में ठंड का मौसम बिताने कितनी दूर-दूर से आते हैं!

□ अरविंद गुप्ते

गौरया

दादी की प्यारी गौरैया
खाना खाने आती,
बड़े चाव से दादी उसको
चावल दाल खिलाती।
उसके लिए एक प्याले में
पानी भरा हुआ है
छुट्टी वाले दिन गौरैया
खाती माल पुआ है।
चीं चीं करके बड़े प्यार से
बात किया करती है
दादी के ही आस-पास
वह तो घूमा करती है।
कभी छेड़ते हम तो
दादी से कह आती है,
दादी की प्यारी गौरैया
हम सबको भी भाती है।

जजमान

मेरे दाऊ
गोल मटोल
तोंद दिख रही-
जैसे ढोल।

सर को घुटा
हाथ ले डंडा
मथुरा के
बन जाते पंडा।

चोटी उनकी
करे कमाल,
चलते दाऊ
तोंद निकाल।
दाऊ-खाऊ
बन जजमान
खा जाते
मन भर पकवान!

☐ चक्रधर शुक्ल
चित्र : आशीष श्रीवास्तव

चीनी लोककथा

मधुमक्खी और केंचुआ

लाखों वर्ष पुरानी बात है। एक थी मधुमक्खी और एक था केंचुआ। दोनों एक-दूसरे के पक्के दोस्त थे। दोनों की शकल-सूरत भी एक-दूसरे से बहुत मिलती थी।

उन दिनों केंचुआ सूरज की रोशनी से बिलकुल नहीं डरता था। वह पूरे दिन चुपचाप मिट्टी में नहीं लेटा रहता था। वह गाना भी गा सकता था और काफी मोटा-तगड़ा था। उसका सिर बहुत बड़ा था। उसके शरीर पर पैर भी थे, हालांकि वे छोटे-छोटे थे। अगर उस केंचुए को कोई आज देखता, तो हरगिज़ नहीं पहचान सकता था।

मधुमक्खी की शकल-सूरत भी आज जैसी नहीं थी। वह न तो शहद बना सकती थी और न शहद का छत्ता। वह उड़ भी नहीं सकती थी, क्योंकि उसके शरीर पर पंख नहीं थे। उसका आकार केंचुए से कुछ छोटा था। उसके छह छोटे-छोटे पैर थे। वह न तो आज की तरह फुर्तीली थी और न निपुण। अगर उस मधुमक्खी को कोई आज देखता, तो हरगिज़ नहीं पहचान सकता था।

जिन दिनों केंचुए के शरीर पर पैर थे

और मधुमक्खी के शरीर पर पंख नहीं थे, उन दिनों धरती पर तरह-तरह की ज़ायकेदार चीज़ें पैदा होती थीं और अंगूर जैसे रस भरे स्वादिष्ट फलों की भरमार थी। उनमें बहुत से फल ऐसे थे जिनका हम नाम भी नहीं जानते। उन दिनों जगह-जगह हरी-हरी, मुलायम घास उगी रहती थी, सुंदर-सुंदर फूल खिले रहते थे। मधुमक्खी और केंचुआ ज़्यादा मेहनत-मशक्कत किए बिना ही अपना पेट भर सकते थे।

जब दोनों भरपेट खाना खा लेते, तो मिलकर खेलते। उन्हें एक-दूसरे से कोई जुदा नहीं कर सकता था। क्या आजकल तुमने कभी मधुमक्खी को केंचुए के साथ खेलते देखा है? अब मधुमक्खी तो उड़ सकती है, पर केंचुआ ज़मीन पर ही रेंगता रहता है। दोनों कभी एक-दूसरे के पास नहीं फटकते और न उनकी एक-दूसरे से शकल ही मिलती है। इसमें संदेह नहीं कि दोनों ही पहले से बिलकुल बदल गए हैं। आख़िर यह कैसे हुआ? आओ, यह दिलचस्प कहानी शुरू से सुनाएं।

हज़ारों-लाखों साल पहले इस धरती पर खाने-पीने की तरह-तरह की ज़ायकेदार चीज़ें मौजूद थीं। पर वे चीज़ें धीरे-धीरे कम होती गईं, क्योंकि लोग उन्हें खाते चले गए, और नई चीज़ें उगाने की तक़लीफ़ किसी ने नहीं उठाई। इसलिए खाने-पीने की चीज़ों को ढूंढ़ना दिन-ब-दिन मुश्किल होता गया।

मधुमक्खी चिंता में पड़ गई, लेकिन केंचुआ बिलकुल निश्चिंत होकर दिन भर गुनगुनाता रहा।

"बंद करो भाई अपना यह गाना!" मधुमक्खी ने तंग आकर कहा। "हमें खाने-पीने की चीज़ें पैदा करने की कोई तरकीब ज़रूर सोचनी चाहिए। क्यों, ठीक है ना?"

केंचुआ मस्ती से लेटा हुआ था। मौज़ में आकर उसने जवाब दिया, "कैसी तरकीब? किसकी तरकीब? तुम आख़िर क्या पैदा कर सकती हो? आजकल तुम अपने को बड़ी होशियार समझने लगी हो! क्या मैं कोई ग़लत बात कह रहा हूं? खाने-पीने की सभी चीज़ें तो अपने आप पैदा होती हैं। भला तुम उन्हें कैसे पैदा कर सकती हो?"

मित्र की व्यंग्यपूर्ण दलील सुनकर मधुमक्खी ने चुप्पी साध ली। यह पहला मौक़ा था जब उन दोनों मित्रों में मतभेद पैदा हो गया।

मधुमक्खी को अपना दिमाग़ इस्तेमाल करना अच्छा लगता था। वह खाने की कोई चीज़ पैदा करने की तरकीब सोचकर ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहती थी, बल्कि कोई ऐसी चीज़ बनाना चाहती थी जो बेहद स्वादिष्ट और मीठी हो। लेकिन यह नहीं जानती थी कि ऐसी चीज़ कैसे बनाई जाए। मधुमक्खी दिन-रात अपना दिमाग़ लड़ाती रही।

एक दिन मूसलाधार वर्षा हो रही थी। दोनों दोस्त पानी से बचने के लिए एक चट्टान के नीचे खड़े हो गए। पानी लगातार बरसता जा रहा था और उनके घुटनों तक पहुंच गया था। मधुमक्खी ठंड से ठिठुरने लगी। हड्डियों में चुभने वाली ठंडी हवा और मूसलाधार वर्षा में परेशान होकर वह केंचुए से बोली, "अगर हम किसी पेड़ के कोटर में रहते, तो कितना अच्छा होता, कितना आराम मिलता!"

केंचुआ ऊंघ रहा था। उसने सिर उठाया और बोला, "बेकार की बातें न करो। तुम हमेशा ऐसी बातें सोचती रहती हो जिन पर अमल करना असंभव होता है।"

लेकिन मधुमक्खी के मन में ज्यों ही यह विचार आया, वह बहुत खुश हुई और बोली, "काश हम भी अपने लिए एक घर बना सकते! पता नहीं हम उसे बना भी सकते हैं या नहीं? अगर हम अपने लिए एक घर बना सकें, तो यह पेड़ के सूखे कोटर में रहने से ज़्यादा अच्छा होगा।"

उन दिनों मधुमक्खी को शहद का छत्ता बनाना नहीं आता था, इसलिए वह उसका नाम नहीं जानती थी।

मधुमक्खी की बात सुनकर केंचुआ नाराज़ हो गया। बोला, "ओह! तुम कैसी बेवकूफी की बातें कर रही हो? हम न जाने कब से पत्तों और पत्थरों की छांह में सोते आए हैं। हमारे पुरखे भी शुरू से ही इसी तरह गुजारा करते आए हैं। लेकिन अब तुम कोई ऐसी चीज़ बनाना चाहती हो, जिसके अंदर हम रह सकें! तुम्हें यक़ीन कैसे हो गया कि इस काम में तुम सफल हो सकती हो? बेकार की बातें बंद करो और मुझे थोड़ी देर शांति से सोने दो।"

उसकी यह बात मधुमक्खी को कुछ बुरी लगी। वह चुप हो गई। लेकिन मन में पक्का इरादा कर लिया कि वह कोई ऐसी चीज़ अवश्य बनाएगी जिसके अंदर वह आराम से रह सके। वह केंचुए को दिखा देना चाहती थी कि ऐसा करना संभव है।

जब वर्षा रुक गई और आसमान साफ़ हो गया, तो मधुमक्खी मिट्टी का छत्ता बनाने की कोशिश करने लगी। उसने पहले पैरों से मिट्टी को गूंथा। फिर उसे दबाकर बहुत-सी छोटी-छोटी टिकियां बनाईं और उन टिकियों को मिलाकर एक बड़ी-सी टिकिया बनाने की कोशिश करने लगी। उन्हें जोड़ने की उसने बार-बार कोशिश की। पर सफल न हो पाई। अंत में वह उन्हें जोड़ने में सफल हो गई। इसके बाद उसने उस बड़ी-सी टिकिया को एक नली के आकार में मोड़ना चाहा। उसने एक बार, दो बार, तीन बार न जाने कितनी बार कोशिश की। पर कामयाब न हो पाई। जब मधुमक्खी थककर चूर हो गई और पसीने से लथपथ हो गई, तो उसने मदद के लिए केंचुए को बुलाया। "मेरे प्यारे दोस्त,

ज़रा मेरी मदद तो करो।'' वह बोली।

लेकिन केंचुआ टस से मस न हुआ। उसके कान में जूं तक न रेंगी।

सूरज की गरमी से मिट्टी सूखने लगी और उस टिकिया को लपेटना मुश्किल हो गया। मधुमक्खी बेहद थक गई थी। इसलिए उसने काम करना बंद कर दिया और आराम करने लगी।

केंचुए ने मधुमक्खी की खिल्ली उड़ाते हुए कहा, ''बहिन जी, बेकार पसीना क्यों बहा रही हो? मैं पहले ही कह चुका हूं, इस तरह मेहनत करने से तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं होगा।''

मधुमक्खी ने कोई जवाब नहीं दिया। वह एक अच्छा-सा घर बनाने की तरकीब सोचने के लिए लगातार माथापच्ची करती रहीं।

कुछ दिनों के बाद जब वे दोनों खाने की खोज में निकले तो उनकी मुलाकात एक कंटीली झाड़ी से हो गई। झाड़ी छोटे-छोटे सफ़ेद फूलों से लदी थी। वह बोली, ''नमस्ते दोस्तों, क्या तुम लोग मेरी कुछ मदद कर सकते हो? मैं खिलती तो हूं, लेकिन फलती नहीं। अगर तुम पराग लाने में मेरी मदद कर सको, तो मैं फलने भी लगूंगी। इसके लिए मैं तुम्हें एक अच्छा-सा उपहार दूंगी।''

केंचुए ने मुंह फेर लिया और टका-सा जवाब दे दिया ''यह मेरा काम नहीं है!''

लेकिन मधुमक्खी बोली, ''अगर तुम चाहो, तो मैं कोशिश कर सकती हूं।''

कंटीली झाड़ी एहसान से लद गई। बोली, ''क्यों नहीं, ज़रूर कोशिश करो।''

''लगता है, तुम्हें झंझट मोल लेने की आदत-सी पड़ गई है,'' केंचुए ने मधुमक्खी से कहा। ''अगर तुम इस झंझट में पड़ना ही चाहती हो, तो पड़ो! मेरी बला से!'' और वह फ़ौरन वहां से चला गया। चलते समय वह शान से गुनगुनाता भी जा रहा था।

मधुमक्खी बड़ी कठिनाई से झाड़ी पर चढ़ने लगी। उसके पैर छोटे और बेडौल थे, इसलिए ऊपर तक पहुंचने में उसे बहुत समय लगा। उसका शरीर भी बेढंगा था, इसलिए वह फूल के पास पहुंचने से पहले ही ज़मीन पर गिर पड़ी। वहां कुछ घास उगी हुई थी। इसलिए उसे चोट नहीं आई। वह धीरे से उठी और कुछ देर आराम करने के बाद फिर एक बार झाड़ी पर चढ़ने लगी।

जब मधुमक्खी जी तोड़ कोशिश कर रही थी, ठीक उसी समय केंचुए को बेरी से लदी एक झाड़ी मिल गई। खट्टी-मीठी बेरी का आनंद लेता हुआ केंचुआ मधुमक्खी के बारे में सोचने लगा।

''वाह! कितनी बढ़िया बात है! मैं आराम से लेटकर भरपेट खाना खाता हूं। मुझे ज़रा भी मेहनत नहीं करनी पड़ती। लेकिन वह मूर्ख मधुमक्खी वहां न जाने क्या कर रही है! मैं सोचता हूं, वह या तो बार-बार झाड़ी से नीचे गिर रही होगी, या भूख से तड़प-तड़प कर मर चुकी होगी।''

जब उसका पेट ठसाठस भर गया, तो वह झाड़ी के पास सो गया।

उधर मधुमक्खी बड़े धीरज से पेड़ पर चढ़ने का प्रयास करती रही। उसने एक बार, दो बार, तीन बार, न जाने कितनी बार कोशिश की। जब मधुमक्खी बार-बार कोशिश कर चुकी, तो उसकी पीठ के बाल हिलने लगे। वह जितना ऊपर चढ़ती जाती, उसके बाल भी उतने ही ज़्यादा हिलते जाते। अचानक एक आश्चर्यजनक बात देखने में आई। मधुमक्खी की पीठ के कुछ बाल बड़े और चौड़े होते गए और चार छोटे-छोटे पंखों में बदल गए। कुछ समय बाद वे मधुमक्खी के शरीर की गति के साथ तालमेल क़ायम करके फड़फड़ाने लगे। इससे उसका शरीर पहले से ज़्यादा हल्का और संतुलित हो गया।

समझ सकते हो कि ऐसा क्यों हुआ।

अगर तुम्हें लकड़ी की एक पतली-सी ऊंची दहलीज़ पर खड़े होना पड़े, तो तुम आसानी से संतुलन खो सकते हो। लेकिन किसी के कहे बिना ही तुम्हारे दोनों हाथ सहज रूप से ऊपर उठ जाएंगे और संतुलन क़ायम करने में सहायता करने लगेंगे। मधुमक्खी की पीठ के चार छोटे-छोटे पंख भी मनुष्य के हाथों की ही तरह संतुलन क़ायम करने में सहायता करने लगे। उनकी सहायता से मधुमक्खी आसानी से झाड़ी पर चढ़ गई।

उस समय केंचुआ बेरी की झाड़ी के नीचे गहरी नींद में सो रहा था और मधुर सपनों में खोया हुआ था। मधुमक्खी के शरीर में हो रहे इस परिवर्तन के बारे में उसे कोई जानकारी नहीं थी।

मधुमक्खी की पीठ पर उगने वाले चारों पंख धीरे-धीरे बड़े होते गए और वर्तमान पंखों के बराबर हो गए। इसके बाद मधुमक्खी ने उड़ना शुरू कर दिया। वह एक फूल का पराग दूसरे फूल में पहुंचाने लगी। कठोर परिश्रम करने की वजह से उसके पैर पहले से ज़्यादा निपुण हो गए।

कंटीली झाड़ी ने मधुमक्खी के प्रति आभार प्रकट किया। उसने अपना सारा अतिरिक्त पराग और मकरंद मधुमक्खी को दे दिया और उसे बता दिया कि मकरंद को स्वादिष्ट मधु या शहद में बदला जा सकता है।

मधुमक्खी पराग और मकरंद को लेकर उड़ गई। लेकिन उसे शहद में बदलना सचमुच कोई आसान काम नहीं था। मधुमक्खी बड़े धीरज वाली थी। उसने अपना दिमाग लड़ाया। बार-बार प्रयोग किए। एक प्रयोग असफल रहा, तो दूसरा प्रयोग किया। जब तक सफलता नहीं मिली, तब तक वह लगातार प्रयोग करती रही।

इस बीच केंचुआ सिर्फ एक ही जगह पड़ा रहा—सोने और खाने के सिवाय उसने और कोई काम नहीं किया। वह गाने में भी आलस करने लगा। वह मधुमक्खी को बिलकुल भूल गया, जिससे उसकी इतनी पुरानी दोस्ती थी।

मधुमक्खी ने शहद बनाने के साथ-साथ मोम बनाना भी सीख लिया और अपने लिए मोम का एक छत्ता बना डाला। यह छत्ता उसने पेड़ के कोटर में बनाया, ताकि आंधी-पानी का उस पर कोई असर न हो। मधुमक्खी उस आरामदेह छत्ते में रहने लगी। वह सुबह-सवेरे ही उठ जाती और रात तक मेहनत करती रहती।

मधुमक्खी की योग्यता, सुंदरता और बुद्धिमत्ता दिन-प्रति-दिन बढ़ती गई। अंत में उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में चमक आ गई, स्पर्श तंतुओं में संवेदनशीलता आ गई और पंखों में पारदर्शिता आ गई। उसकी शकल बदलते-बदलते आज की मधुमक्खी जैसी हो गई।

एक दिन मधुमक्खी को अपने दोस्त केंचुए की याद आ गई। वह चाहती थी कि केंचुआ भी शहद का स्वाद चख ले और उसे बनाने की विधि सीख ले, ताकि उसे भी कुछ काम मिल जाए।

मधुमक्खी अपने छत्ते से निकली और जगह-जगह उड़ती हुई केंचुए को ढूंढने लगी। वह अपने पुराने दोस्त का नाम लेकर ज़ोर-ज़ोर

से पुकारती जा रही थी। पर केंचुआ उसे कहां मिलता? मधुमक्खी बहुत दिनों तक उसकी खोज करती रही, मगर वह कहीं भी नज़र नहीं आया।

बात दरअसल यह थी कि उस लंबे अरसे के दौरान केंचुए के शरीर में भी बहुत से परिवर्तन हो गए थे। उसके छोटे-छोटे पैर दिन-प्रति-दिन और छोटे होते गए, क्योंकि वह उन्हें बहुत कम इस्तेमाल करता था। एक दिन लंबी नींद से उठने के बाद उसने देखा कि उसके पैर बिलकुल गायब हो गए हैं। बोलने और गाने में आलस करने की वजह से वह बिलकुल गूंगा बन गया। चूंकि वह हमेशा सोया रहता था और मस्तिष्क का बिलकुल उपयोग नहीं करता था, इसलिए उसकी बुद्धि भी धीरे-धीरे कम होती गई। लेकिन उसका लालची मुंह पहले से ज़्यादा मज़बूत बनता गया। यहां तक कि वह खूब चबा-चबा कर मिट्टी भी खाने लगा। वह बड़ा आलसी था। इसलिए जो चीज़ सामने आ जाती, उसी को खा लेता। धीरे-धीरे उसके आसपास की सभी अच्छी-अच्छी चीज़ें ख़त्म होती गई और उसके खाने के लिए मिट्टी के सिवाय दूसरी कोई चीज़

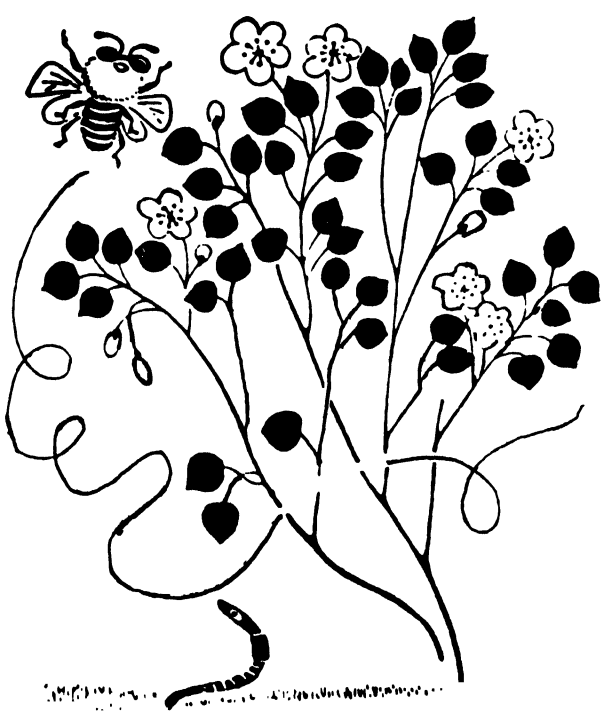

नहीं रह गई। इसलिए वह पहले से ज़्यादा लंबा और पतला होता गया। अब उसे पहचानना भी मुश्किल था। मधुमक्खी कई बार उसके ऊपर से उड़ी। फिर भी उसे नहीं पहचान पाई।

वास्तव में केंचुआ भी मधुमक्खी को नहीं पहचान सका। उसे आश्चर्य हो रहा था कि उसका नाम लेकर कौन पुकार रहा है। एक दिन उसने एक कंटीली झाड़ी के अंकुर को यह कहते सुना, "आओ बैठो, कामकाजी मधुमक्खी बहिन!" तब कहीं केंचुए को पता चला कि वह उड़ने वाला जीव दरअसल मधुमक्खी है, जो किसी ज़माने में उसकी दोस्त थी। उसे बड़ी शर्म महसूस हुई और बड़ा पछतावा हुआ। वह फौरन अपने बिल के अंदर घुस गया और रोने लगा।

कंटीली झाड़ी ने बिल के बाहर से उसे दिलासा दिया। बोली, "रोओ मत केंचुए! अगर तुम भी मेहनत करोगे और आलसियों की तरह नहीं बैठे रहोगे, तो सब लोग तुम्हारा भी स्वागत करेंगे।"

केंचुआ एक भी शब्द नहीं बोला। आंखें बंद करके चुपचाप सोचता रहा, "तुम ठीक कहती हो बहिन। मैं भी अब कोई काम करूंगा। अच्छी फसल उगाने में मदद करने के लिए खेत की मिट्टी ही पलटता रहूंगा।"

इस तरह केंचुए ने आलसीपन और सुस्ती से हमेशा के लिए छुटकारा पाने का पक्का इरादा कर लिया। हालांकि वह बिलकुल गूंगा था, फिर भी मुंह से मिट्टी अवश्य खा सकता था, मिट्टी पलटकर ज़मीन को उपजाऊ बनाने में मदद अवश्य कर सकता था। तब से केंचुए के परिश्रम की सब लोग प्रशंसा करने लगे। पर वह अब भी दिन में शर्म के मारे बाहर नहीं निकलता और अपनी पुरानी हमजोली मधुमक्खी के सामने जाने में संकोच करता है।

☐ येन वन चिङ

सभी चित्र : वाङ चीह्वा, माओ युङ्खुन

चार कमरे, बारह दरवाज़े

एक गांव के पास एक खंडहर में चार कमरों का एक मकान था। मकान के चारों कमरे एक-दूसरे से दरवाज़ों से जुड़े थे। कुल बारह दरवाज़े थे। सभी गांव वाले उस खंडहर को देखना चाहते थे, पर हिम्मत किसी की नहीं होती थी। गांव वाले खंडहर को भूतों का अड्डा समझते थे। खंडहर के चारों ओर घना जंगल भी था।

गांव में सरजू नाम का एक लड़का था। बड़ा उत्पाती। एक दिन उसके मन में उस खंडहर को देखने की इच्छा जागी। वह उस मकान को देखने चल पड़ा।

सरजू ने मकान के एक दरवाज़े से अंदर प्रवेश किया, परंतु यह क्या जैसे ही उसने दरवाज़ा पार किया, चररररऽऽ की आवाज़ के साथ वह बंद हो गया। घबराकर सरजू दूसरे दरवाज़े से अगले कमरे में गया। वह दरवाज़ा भी उसके निकलते ही बंद हो गया। सरजू थोड़ा और घबराया, पर उसने हिम्मत नहीं हारी। कुछ सोचकर वह विभिन्न दरवाज़ों से गुजरने लगा और सभी बारह दरवाज़ों से होता हुआ वह उसी दिशा में किसी दूसरे दरवाज़े से बाहर निकला जिस दिशा से मकान में घुसा था। इस दौरान उसने सभी कमरों में दो बार प्रवेश किया।

गांव पहुंचकर उसने बताया कि वह खंडहर देख आया है। सरजू का किस्सा सुनकर गांव के कुछ अन्य लोगों ने खंडहर देखने की ठानी। सरजू ने सोचा कि ये लोग घबराकर उस खंडहर में फंस गए तो बहुत बुरा होगा। तब उसने मकान का नक्शा बनाकर गांव वालों के सामने रखा और उन्हें चार बातें बताई—

1. इस मकान में चार कमरे हैं, जो एक-दूसरे से दरवाज़ों से जुड़े हैं।
2. मकान में कुल बारह दरवाज़े हैं।
3. किसी दरवाज़े से एक बार गुजरने के बाद वह दरवाज़ा अपने आप बंद हो जाता है।
4. गांव की दिशा से ही मकान में प्रवेश कर अंत में उसी दिशा में बाहर निकलना है, क्योंकि अन्य दिशा में बाहर निकलने पर गांव का रास्ता भटक जाने का डर है।

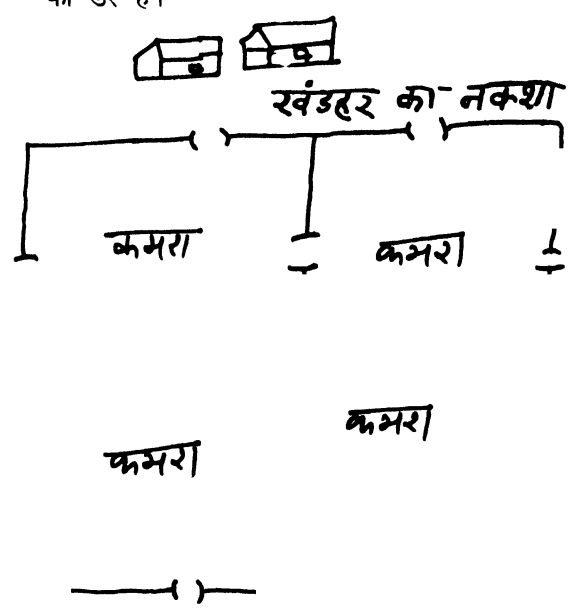

क्या तुम मकान के इस नक्शे को देखकर पेंसिल से ऐसा रास्ता बना सकते हो जिससे सभी दरवाज़ों और कमरों से गुजरो और अंत में उसी दिशा में किसी और दरवाज़े से बाहर निकलो, जिस दिशा में मकान में प्रवेश किया था। पर खबरदार... किसी भी दरवाज़े से दुबारा नहीं गुज़रना है और प्रत्येक कमरे में दो बार से अधिक नहीं जाना है।

□ विवेक पारस्कर

विज्ञान पहेलियां

दो गैसों का यौगिक हूं मैं,
बनकर द्रव मैं बहता हूं।
नहीं गंध, नहीं स्वाद है मुझमें,
कई रूपों में रहता हूं।

●

सबके दिल की धड़कन सुनकर
कानों तक पहुंचाता हूं।
बना रहूं गलहार नर्स का
नहीं वैद्य को भाता हूं।

●

मेरी जान है चांदी जैसी,
शीशे का है मेरा बदन।
अंशाकित हूं पैमाने सा,
नाम बताओ करो जतन।

●

लोहे का है आदमी,
करता सारे काम।
खाना कुछ खाता नहीं,
सुबह हो या शाम।

☐ **अशोक अगरोही**

यहां तीन परछाईयां दी गई हैं। बताओ इस जोकर की कौन-सी है?

वर्ग पहेली 24 : हल

बाएं से दाएं : 2. जस्ता 4. कोपल 6. गलन 7. रवा 8. चरम 11. आयन 13. आयुर्वेद 14. मकरंद 16. महक 18. तकली 22. बया 23. कणाद 24. पारद 25. लीटर

ऊपर से नीचे : 1. मंगल 2. जनक 3. ताख्य 5. पठार 9. मवाद 10. वायु 11. आदम 12. नमक 13. आयत 15. रंग 17. हरियाली 19. कमर 20. मकर 21. बदन

वर्ग पहेली : 25

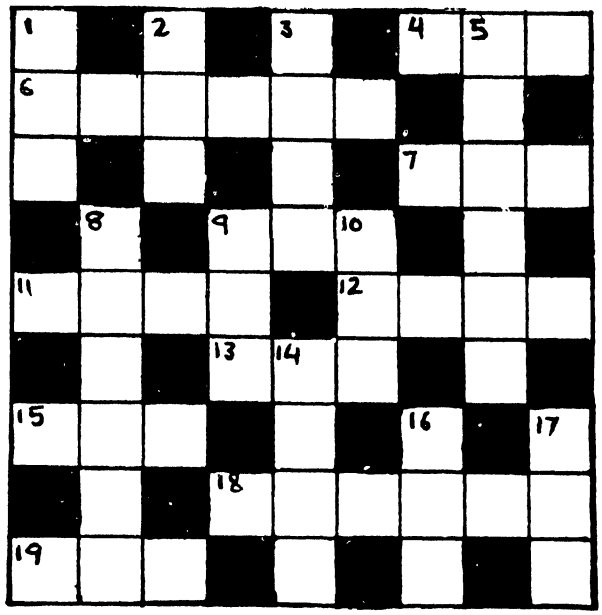

संकेत : बाएं से दाएं

4. विकलांग (3)
6. संशोधित खुरदार रब का बेटा (6)
7. गानेवाला (3)
9. आसपास तनाव में कैद शहर (3)
11. पहला आधा अनुमान बाद का आधा सरदार कट्टर (4)
12. कवि राल बदलकर भयानक (4)
13. लक्ष्मण लक्ष्मीनारायण करपेकर की संक्षिप्त उमंग (3)
15. आयुर्वेद संहिता के रचयिता (3)
18. हामी वाला वाक्य (6)
19. यति के सिर के आसपास काल से प्रभावित (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. नारी अबला या...? (3)
2. हे भगवान! (1, 2)
3. हमेशा लीन के पर्यायों की अध्यक्षता (4)
5. गांव के स्थानीय प्रशासन का गांधीवादी सपना! (4, 2)
8. जिसकी नकल की जा सके (धुन हस्तांतरणीय) (6)
9. आसान (3)
10. नाक में कवि की पूंछ का खिवैया (3)
14. ललतान के पूर्वार्द्ध और सरकार के उत्तरार्ध के गठजोड़ की चुनौती (4)
16. समाप्त (3)
17. सबसे बड़ी इकाई कर, काम करने वाला (3)

क्या तुम कोई ऐसी पहेली माथापच्ची जानते हो जो अब तक चकमक में न छपी हो! जानते हो तो फिर देर किस बात की। तुरंत लिख भेजो हमें!

कागज़ की बर्फ़ी

पिछले अंक में तुमने 45°, 60° और 90° के कोण बनाए थे। आओ कुछ और कोण देखते हैं कागज़ की मदद से।

30° का कोण कैसे मोड़ोगे? इसके दो तरीके हो सकते हैं। एक तो किसी भी 90° के कोने को तीन बराबर भाग में बांट दो। दूसरा, 60° के कोण को दो भाग में बांट दो (चित्र-1)। 30° के कोण को दो बराबर हिस्सों में मोड़कर 15° के कोण भी बना सकते हो (चित्र-2)। इन कोणों को जोड़-घटा कर कई और कोण बन सकते हैं। सोचो तो भला कैसे?

बर्फ़ी तो तुमने देखी भी होगी और खाई भी होगी! कागज़ की बर्फ़ी बना सकते हो!

पहले एक पन्ने को दोहरा करो, फिर उसे चार परतों में मोड़ो (चित्र-3)। चार तहों वाले कोने को मोड़कर एक त्रिकोण बनाओ (चित्र-4)। अब पन्ने को खोलो। खोलते ही तुम्हें बीचों बीच एक बर्फ़ीनुमा चतुर्भुज दिखाई देगा (चित्र 5, 6)।

अगर तुम चार तहों वाले कोने में कई समानांतर मोड़ बनाओ (चित्र-7) तो पन्ने को खोलते ही तुम्हें बर्फ़ी के अंदर बर्फ़ी का मज़ेदार नमूना दिखाई देगा (चित्र-8)।

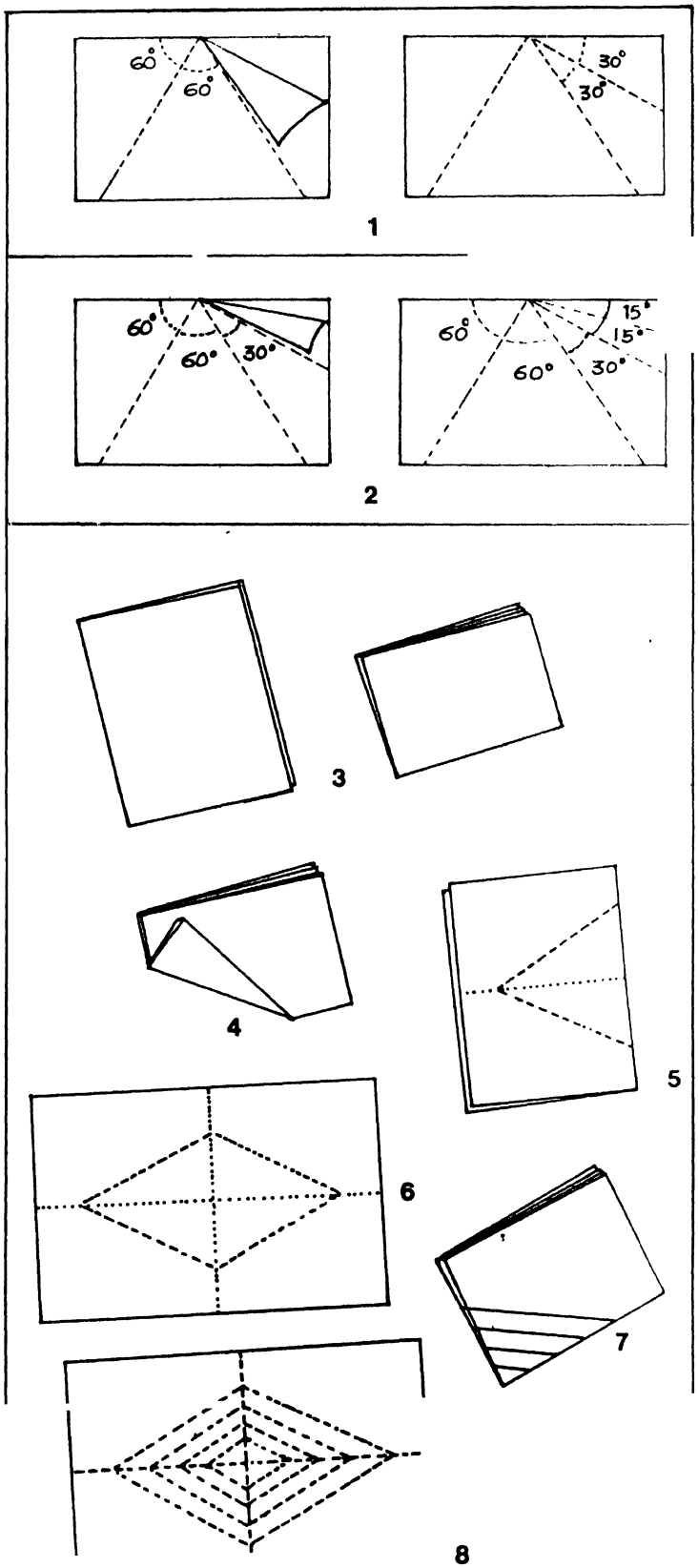

☐ अरविंद गुप्ता

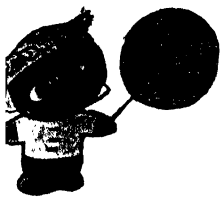

नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे

एक समय की बात है। एक दिन नन्हा गुदड़ीलाल...।

"नन्हा गुदड़ीलाल? यह नन्हा गुदड़ीलाल आख़िर कौन था?"

गुदड़ीलाल कपड़े का एक नन्हा-सा गुड्डा था। आज मैं तुम्हें उसी गुदड़ीलाल के बारे में कुछ कहानियां सुनाने जा रहा हूं, उसके दिलचस्प कारनामों का परिचय देने जा रहा हूं। कपड़े का वह नन्हा-सा गुड्डा...।

"पर उसका असली नाम क्या था?"

उसका असली नाम भी गुदड़ीलाल ही था। कपड़े का वह नन्हा-सा गुड्डा...।

"बड़ा अजीब-सा नाम है इस गुड्डे का! इसका नाम हम सब बच्चों की तरह क्यों नहीं है?"

"हूं ठीक कहा तुमने... आज मैं तुम्हें यही बताऊंगा कि उसका नाम गुदड़ीलाल क्यों पड़ा!"

नया साल आने ही वाला था। शाला में भारी चहलपहल थी। सब लोग व्यस्त थे। बच्चे नाच-गाने और नाटक का अभ्यास कर रहे थे। नाटक का नाम था; "नन्हे सफ़ेद खरगोश ने गेहूं बोया"। यह प्रोग्राम नए साल के मौक़े पर पेश किया जाने वाला था। बच्चों के माता-पिता, दादा-दादी सभी को निमंत्रण दिया गया था। शाला की दीदियां प्रोग्राम के लिए तरह-तरह की पोशाकें सिलने में व्यस्त थीं, रसोइए अच्छे-अच्छे पकवान बना रहे थे। अध्यापिकाएं सबसे ज़्यादा व्यस्त थीं। वे बच्चों के लिए नए साल के तोहफ़े तैयार कर रही थीं। वे बच्चों को नाच-गाने भी सिखा रही थीं।

जब ढेर सारे तोहफ़े तैयार हो गए, तो उन्हें मेज़ पर रख दिया गया और एक बड़े-से लाल काग़ज़ से ढक दिया गया। काग़ज़ पर लिखा था :

नए साल के तोहफ़े

क्या तुम लोग बता सकते हो कि उस लाल काग़ज़ के नीचे क्या-क्या तोहफ़े थे? इसके बारे में बच्चों को कोई जानकारी नहीं थी। अध्यापिकाएं उन्हें मेज़ के पास नहीं जाने दे रही थीं। लाल काग़ज़ को नए साल के दिन ही हटाया जाना था। उसे हटाने के बाद बच्चों को कितनी ख़ुशी होगी! सचमुच कितना मज़ा आएगा!

काग़ज़ के नीचे आख़िर क्या रखा है, यह मैं अच्छी तरह जानता था। जब मैं स्कूल गया था, तो काग़ज़ के नीचे झांककर देख चुका था। क्या तुम बता सकते हो कि मैंने मेज़ पर क्या देखा था?

काग़ज़ के नीचे बहुत से खिलौने रखे हुए थे!

हां, ढेर सारे खिलौने! मेज़ पर एक काला भालू था, एक जिराफ था, एक मोटा-सा नन्हा सुअर था। उनकी बगल में एक बंदर था और एक गुड़िया थी। इनके अलावा मोटरकार, रेलगाड़ी, ट्रैक्टर और हवाईजहाज़ भी रखे हुए थे। सभी खिलौने बड़े सुंदर थे और देखने में असली जान पड़ते थे। मज़े की बात यह थी कि ये सभी खिलौने कपड़े की बचीखुची कतरनों से बनाए गए थे। मोटरकार और हवाईजहाज़ तो ऐसे लग रहे थे मानो चलने को तैयार हों।

आज नए साल की पूर्वसंध्या थी। फिर नया साल आएगा। उस दिन बच्चों को उपहार मिलेंगे।

"कल नया साल है," एक अध्यापिका ने कहा। "अब तक हम आख़िर कितने खिलौने बना चुके हैं? गिनकर देख लें, तो अच्छा होगा।"

अध्यापिका का नाम था श्याओ। वह उम्र में बाकी सब अध्यापिकाओं से छोटी थी। इसलिए उसका नाम अध्यापिका श्याओ पड़ गया था (चीनी भाषा में "श्याओ" का मतलब है "छोटी")। अगर तुम छै साल के तीन बच्चों की उम्र को जोड़ दो, तो उसका योग अध्यापिका श्याओ की उम्र से एक वर्ष ज़्यादा हो जाएगा। क्या तुम बता सकते हो कि उसकी उम्र कितनी थी?

अध्यापिका श्याओ खिलौने गिनने लगी; "एक, दो, तीन, चार..." जब वह पूरे खिलौने गिन चुकी, तो खुशी से तालियां बजाने लगी। उसकी दोनों चोटियां कंधों पर झूलने लगीं।

"निन्यानवे," वह बोली। "एक खिलौना कम कैसे रह गया है?"

"कौन कहता है कि एक खिलौना कम है?" चश्मे वाली अध्यापिका बोल पड़ी। उसका नाम श्वी था।

"तुम्हें क्या हो गया है? क्या तुम नहीं जानती कि हमारी शाला में सौ बच्चे हैं?" अध्यापिका श्याओ ने कहा।

"तुम्हारी बात बिलकुल सही है!" अध्यापिका श्वी ने मुस्कराते हुए कहा। "लेकिन किताबों के शेल्फ में एक नन्हा कुत्ता भी तो पड़ा है। खेलते समय बच्चों से उसकी सिलाई कुछ खुल गई है। एक-दो टांके लगाकर ठीक हो जाएगा।"

"ठीक है," अध्यापिका श्याओ बोली। "नन्हे कुत्ते का तो मुझे ख़्याल ही नहीं रहा।"

"तो काम पूरा हो गया है," अन्य अध्यापिकाएं बोलीं। "निन्यानवे खिलौने तो हम लोग बना ही चुके हैं। इस कुत्ते को मिलाकर सौ हो जाएंगे।"

सभी अध्यापिकाएं शाम का भोजन करने घर चली गईं। ख़ाना खाने के बाद उन्हें फिर स्कूल लौटना था। शाम का भोजन करने के बाद बच्चे अपने माता-पिता, दादा-दादी के साथ नए साल के समारोह में शामिल होने आने वाले थे। इस मौक़े पर नाटक भी खेला जाने वाला था। अध्यापिकाओं की तैयारी का बहुत सा काम अभी बाक़ी था। उन्हें बच्चों के माता-पिता, दादा-दादी के स्वागत-सत्कार का प्रबंध करना था, उनके लिए चायपानी का प्रबंध करना था, बच्चों को केक और फल बांटने की व्यवस्था करनी थी।

अध्यापिका श्वी ने अध्यापिका श्याओ से घर चलने को कहा। लेकिन अध्यापिका श्याओ अभी घर नहीं लौटना चाहती थी। वह अब भी खिलौनों के बारे में सोच रही थी। 'इस में शक़ नहीं कि नन्हें कुत्ते को एक-दो टांके लगाकर ठीक किया जा सकता है,' उसने मन ही मन सोचा, 'फिर भी यह एक पुराना ही खिलौना तो है। बच्चे इससे काफ़ी खेल चुके हैं। जिस किसी बच्चे को यह मिलेगा, वह उदास हो जाएगा। अगर सौ बच्चों में से एक भी बच्चा उदास हो गया, तो कितनी बुरी बात होगी! जैसे भी हो, मुझे एक नया खिलौना ज़रूर बना लेना चाहिए, जिससे सब बच्चे खुश हो जाएं।'

अध्यापिका श्याओ ने कपड़े की कतरनों के लिए शाला का कोना-कोना छान मारा। पर कहीं एक भी कतरन नज़र नहीं आई। उसने सभी अलमारियों के दराज़ उलट-पुलट कर देख लिए और सभी शेल्फों को टटोल डाला। पर कहीं कुछ नहीं मिला।

बाहर हल्की-हल्की बरफ़ पड़ रही थी और ठंड बहुत तेज़ थी। अध्यापिका श्याओ परेशान हो गई।

काफ़ी खोजबीन के बाद उसे हरे और गुलाबी रंग के दो छोटे-छोटे कपड़े के टुकड़े मिल गए। हरा टुकड़ा गुड़िया की स्कर्ट से बचा था और गुलाबी कतरन एक बड़ी गुड़िया का मुंह बनाते समय बची थी।

परेशान होकर वह थोड़ी देर के लिए कुर्सी पर बैठ गई। फिर बोली, "ठीक है, मैं कपड़े का एक नन्हा-सा गुड्डा बनाती हूं। हालांकि वह बहुत छोटा होगा, फिर भी मैं उसे बड़ी सावधानी से बनाऊंगी। वह बड़ा सुंदर होगा और जिसे भी मिलेगा, वह खुशी से नाच उठेगा!"

उसने गुड्डे का मुंह और बदन गुलाबी रंग के कपड़े से और जाकिट हरे रंग के कपड़े से बनाने की सोची। पर उसका पाजामा किस कपड़े से बनाया जाएगा?

वह कमरे में चक्कर लगाने लगी। उसके माथे पर बल पड़ गए। अलमारी पर लगे आदमक़द आईने के सामने खड़ी होकर वह अपने प्रतिबिंब से पूछने लगी, "अब क्या होगा?" प्रतिबिंब भी उससे वही सवाल पूछने लगा, "अब क्या होगा?"

आईने के सामने खड़ी होकर अध्यापिका श्याओ ने अपनी दोनों चोटियां आगे कर लीं और दिमाग़ पर ज़ोर डालने लगी।

"रास्ता निकल आया!" वह मुस्कराकर बोली। उसकी नज़र चोटियों पर लगे सफेद रिबनों पर पड़ चुकी थी, जिन्हें वह नए साल के लिए विशेष रूप से लाई थी। वे बिलकुल नए थे।

"यह मुझे पहले क्यों नहीं सूझा?" अध्यापिका श्याओ ने अपनी दोनों चोटियों से रिबन खोल लिए। "सफ़ेद रिबन पाजामा बनाने के लिए बिलकुल ठीक रहेगा।"

वह कुर्सी पर बैठ गई और काग़ज़ पर एक नन्हे गुड्डे का चित्र बनाने लगी। गुड्डे का सिर बड़ा, चेहरा गोलमटोल और क़द बहुत छोटा था। सिर पर सामने की तरफ बालों का एक गुच्छा था। हरी जाकिट और सफ़ेद पाजामे में वह सचमुच बड़ा सुंदर लग रहा था!

अध्यापिका श्याओ ने यह चित्र केवल डिजाइन के तौर पर बनाया था। अब वह गुड्डा बनाने लगी। सबसे पहले उसने गुलाबी रंग के कपड़े से थैलीनुमा एक चीज़ बनाई। पर वास्तव में वह थैली नहीं थी। इस थैलीनुमा चीज़ में रूई भरते ही वह नन्हे गुड्डे में बदल सकती थी। पर रूई कहां से आए? यह एक नई समस्या थी। अध्यापिका श्याओ फिर सोच में पड़ गई। पर ज्योंही उसकी नज़र अपने रूईदार कोट पर पड़ी, वह मुस्कराने लगी। कोट का एक सिरा सुई से खोलकर उसने धीरे से कुछ रूई निकाल ली और उसे बड़ी सावधानी से थैली-नुमा चीज़ में भर दिया। रूई भरते ही वह कपड़े के एक प्यारे-से नन्हे गुड्डे जैसी दिखाई देने लगी। लेकिन उसे कपड़े पहनाना और उसका चेहरा-मोहरा बनाना अभी बाक़ी था।

अध्यापिका श्याओ गुड्डे के कपड़े सिलने लगी। जल्दी ही उसने गुड्डे को हरी जाकिट और सफ़ेद पाजामा पहना दिया। फिर उसके सिर पर काले तागे से कुछ बाल लगाकर उन्हें अच्छी तरह काटछांट दिया, ताकि वे असली बाल लगें।

अब गुड्डे की आंखें, भौंहें, नाक और मुंह बनाना बाक़ी रह गया था। उसने क़लम उठाई और सावधानी से ये सब चीज़ें बनाने लगी। वह काम में इतनी डूब गई कि शाम का भोजन करना और अपनी जाकिट का

कोना सिलना भी भूल गई। उसे यह भी पता नहीं चला कि शाम हो चुकी है और बाहर तेज़ बरफ़ पड़ रही है।...

गुड्डे की काली आंखें देखने में बड़ी सुंदर लग रही थीं। वे हूबहू असली आंखों जैसी लग रही थीं। लगता था, जैसे गुड्डा बोल रहा हो, "शुक्रिया दीदी, इतनी अच्छी आंखें बनाने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया!"

पूरा काम ख़त्म होने के बाद उसने क़लम नीचे रख दी। फिर एक लंबी सांस भरकर बोली, "तुम कितने प्यारे गुड्डे हो! तुम सचमुच कितने सुंदर लग रहे हो!"

वह खुश होकर तालियां बजाने लगी। फिर गुड्डे को हाथ में उठाकर उसकी तरफ देखती हुई बोली; "अब मैं तुम्हारे लिए एक छोटी-सी टोपी बना देती हूं। बाहर बहुत ठंड पड़ रही है। कल तुम्हें कोई बच्चा अपने घर ले जाएगा। टोपी पहन लोगे, तो जुकाम नहीं होगा।"

अध्यापिका श्याओ ने बड़ी गुड़िया की जेब से एक छोटा-सा पीला रूमाल निकाल लिया। कुछ ही देर में एक छोटी-सी नुकीली टोपी बनकर तैयार हो गई। यह टोपी उसने कपड़े के गुड्डे को पहना दी। टोपी से उसका पूरा सिर ढक गया। सिर्फ़ कुछ बाल अब भी माथे पर दिखाई दे रहे थे।

अध्यापिका श्याओ ने गुड्डे को उठाकर चूम लिया। "अब तुम पहले से कहीं ज़्यादा सुंदर लग रहे हो, और शैतान भी!"

बाहर से आवाज़ें आने लगीं। बच्चे शाम का खाना खाने के बाद अपने माता-पिता, दादा-दादी के साथ प्रोग्राम देखने आने लगे थे। कुछ लोग जूतों पर पड़ी बरफ़ झाड़ रहे थे, तो कुछ लोग कपड़ों पर पड़ी बरफ़ हटा रहे थे।

"मैं तुम्हें सबसे ज़्यादा प्यार करती हूं!" अध्यापिका श्याओ ने नन्हे गुड्डे से कहा। "यों तो तुम सबसे छोटे हो, पर तुम्हें बनाने में मुझे कितनी मुसीबतें उठानी पड़ीं! कल तुम किसी बच्चे के साथ अपने नए घर चले जाओगे। वहां तुम्हें अच्छी तरह रहना चाहिए और बड़ों का कहना मानना चाहिए। अब मैं तुम्हारा एक अच्छा-सा नाम रखना चाहती हूं। मैंने तुम्हें कपड़े की छोटी-छोटी कतरनों से बनाया है। इसलिए मैं तुम्हारा नाम "गुदड़ीलाल" रखना चाहती हूं। आज से तुम्हारा नाम गुदड़ीलाल हो गया है। याद रखना।"

अचानक दरवाज़ा खुला और एक बच्चा अंदर आ गया। वह अध्यापिका श्याओ से समारोह में चलने का अनुरोध करने लगा।

"मैं अभी आ रही हूं," अध्यापिका श्याओ ने मुस्कराते हुए कहा। फिर उसने लाल काग़ज़ ऊपर उठाया और कपड़े के नन्हे गुड्डे को बाक़ी खिलौनों के साथ मेज़ पर रखकर फुर्ती से कमरे के बाहर चली गई।

अब तो तुम समझ ही गए होगे कि कैसे नन्हा-सा गुड्डा गुदड़ीलाल बना!

अगले अंक में पढ़ो कि काग़ज़ के नीचे रखे दूसरे खिलौनों ने गुदड़ीलाल के साथ क्या किया?

मूल लेखक : सुन यओच्युंन
अनुवादक : जानकी एवं श्यामा बल्लभ
सभी चित्र : शन फेई

ग्रामीण बेरोज़गारों को रोज़गार दिलाने की अनुपम योजना

- ☐ प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी द्वारा हर गांव के ग़रीब परिवार के कम से कम एक सदस्य को रोज़गार देने के लिए पूरे देश में लागू की गई "जवाहर रोज़गार योजना" के क्रियान्वयन पर मध्यप्रदेश में पूरी मुस्तैदी से अमल शुरू हो गया है।
- ☐ "जवाहर रोज़गार योजना" के अन्तर्गत इस वर्ष 1989-90 के लिए मध्यप्रदेश को 256 करोड़ रुपये स्वीकृत किया गया है।
- ☐ "जवाहर रोज़गार योजना" के क्रियान्वयन के लिए ग्राम पंचायतों को पूरी ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। इस योजना के तहत राशि सीधे ग्राम पंचायत को सौंपी गई है।
- ☐ "जवाहर रोज़गार योजना" के अंतर्गत गांव की ज़रूरत के मुताबिक निर्माण कार्य चुनने का पूरा अधिकार ग्राम पंचायत को दिया गया है। इसमें किसी अन्य स्तर से हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।
- ☐ इस रोज़गार योजना में यह भी प्रावधान किया गया है कि योजना के अंतर्गत जो कार्य किए जाएंगे उनमें लागत का कम से कम 50 प्रतिशत भाग मज़दूरी पर ख़र्च होना अनिवार्य है। इस योजना में मज़दूरों को मज़दूरी के अतिरिक्त रियायती दर पर अनाज भी दिए जाने का निर्णय लिया गया है।
- ☐ योजना के तहत उपलब्ध रोज़गार में 30 प्रतिशत रोज़गार महिलाओं को देने की व्यवस्था।
- ☐ योजना की 15 प्रतिशत राशि हरिजन आदिवासियों से जुड़े कार्य में खर्च करने का इंतज़ाम।
- ☐ "जवाहर रोज़गार योजना" द्वारा गांवों में रहने वाले ग़रीब परिवार को ग़रीबी की रेखा से ऊपर उठाने के लिए ठोस क़दम उठाया गया है।

हक़दार की तरफ़दार — मध्यप्रदेश सरकार

ज.सं.सं. 1110/डी/89

प्रकृति की देन सबसे शुद्ध
आ गया
स्नेह
मक्खन, घी और
तुरंत घुलने वाला स्किम्ड मिल्क पाउडर
स्नेह, ताज़े ताज़े डेयरी पदार्थ. उगता सूरज जो ताज़गी लाए वही ताज़गी स्नेह में आए. भारत की सबसे नई और आधुनिक डेयरी में उत्पादित— स्नेह. उत्पादन के दौरान इसे हाथ से नहीं छुआ जाता— स्वच्छता के लिए। प्रकृति की शुद्धता, प्राकृतिक स्वाद स्नेह में आबाद.
स्नेह-प्रकृति के प्यार का उपहार
Sneha
PURE GHEE
Sneha
Sneha

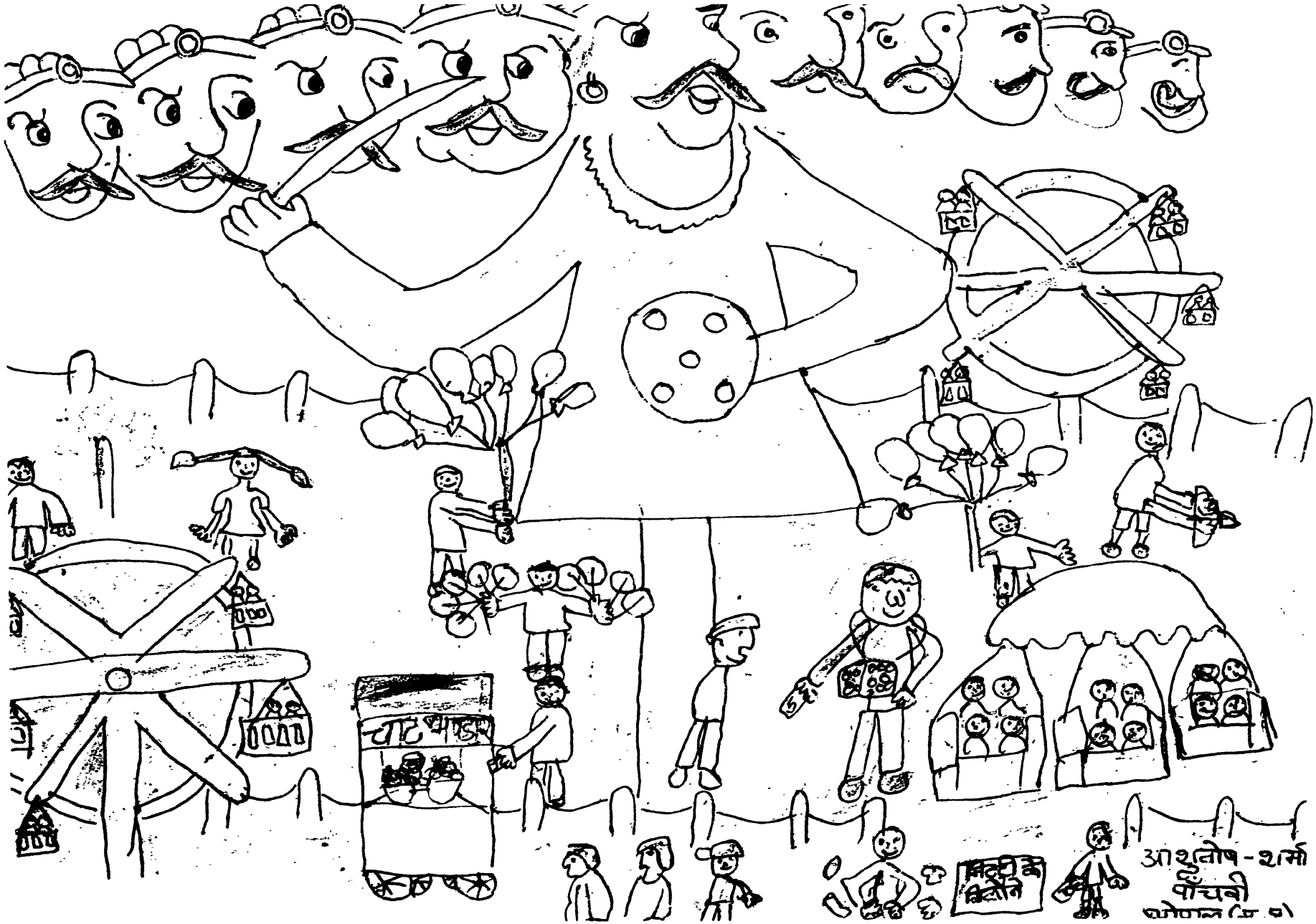
चाट भण्डार
आशुतोष - शर्मा
पाँचवी
भोपाल (म.प्र.)

पर्जीयन क्रमांक 1317/सी/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्टार द्वारा पंजीकृत
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/89

सचिन प्र. रानडे, भुसावल

कंपोज़र्स - अभिषेक। मुद्रक - भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल। एकलव्य के लिए विनोद गयना द्वारा प्रकाशित।